قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

وَاِذَاسَمِعُوْا

पारा - 7

eParah

الجزء ٧

تَفِيْضُ	اَعْيُنَهُمْ	تَرٰٓى	اِلَى الرَّسُوْلِ	اُنْزِلَ	مَآ	سَمِعُوْا	وَاِذَا
बह पड़ती हैं	उनकी आंखों को	आप देखते हैं	तरफ़ रसूल के	नाज़िल किया गया	जो	वो सुनते हैं	और जब

رَبَّنَآ	يَقُوْلُوْنَ	مِنَ الْحَقِّ ج	عَرَفُوْا	مِمَّا	مِنَ الدَّمْعِ
ऐ हमारे रब	वो कहते हैं	हक़ को	उन्होंने पहचान लिया	इस (वजह) से जो	आंसुओं से

بِاللّٰهِ	لَا نُؤْمِنُ	لَنَا	وَمَا	الشّٰهِدِيْنَ (83)	مَعَ	فَاكْتُبْنَا	اٰمَنَّا
अल्लाह पर	कि ना हम ईमान लाएं	हमें	और क्या है	शहादत देने वालों के	साथ	पस लिख दे हमें	ईमान लाए हम

مَعَ	رَبُّنَا	يُّدْخِلَنَا	اَنْ	وَنَطْمَعُ	مِنَ الْحَقِّ لا	جَآءَنَا	وَمَا
साथ	रब हमारा	दाख़िल करेगा हमें	कि	और हम उम्मीद रखते हैं	हक़ में से	आया हमारे पास	और (उस पर) जो

جَنّٰتٍ	قَالُوْا	بِمَا	اللّٰهُ	فَاَثَابَهُمُ	الصّٰلِحِيْنَ (84)	الْقَوْمِ
बाग़ात को	उन्होंने कहा	बवजह उसके जो	अल्लाह ने	पस बदले में दिया उन्हें	जो सालेह हैं	उन लोगों के

جَزَآءُ	وَذٰلِكَ	فِيْهَا ط	خٰلِدِيْنَ	الْاَنْهٰرُ	مِنْ تَحْتِهَا	تَجْرِيْ
बदला है	और ये	उनमें	हमेशा रहने वाले हैं	नहरें	उनके नीचे से	बहती हैं

اَصْحٰبُ	اُولٰٓئِكَ	بِاٰيٰتِنَآ	وَكَذَّبُوْا	كَفَرُوْا	وَالَّذِيْنَ	الْمُحْسِنِيْنَ (85)
साथी	यही लोग हैं	हमारी आयात को	और उन्होंने झुठलाया	कुफ़्र किया	और वो जिन्होंने	एहसान करने वालों का

ع 11 9 1

اَحَلَّ	مَآ	طَيِّبٰتِ	لَا تُحَرِّمُوْا	اٰمَنُوْا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	الْجَحِيْمِ (86) ع
हलाल कीं	जो	पाकीज़ा चीज़ें	ना तुम हराम करो	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	जहन्नम के

الْمُعْتَدِيْنَ (87)	لَا يُحِبُّ	اللّٰهَ	اِنَّ	تَعْتَدُوْا ط	وَلَا	لَكُمْ	اللّٰهُ
हद से तजावुज़ करने वालों को	नहीं वो पसंद करता	अल्लाह	बेशक	तुम हद से तजावुज़ करो	और ना	तुम्हारे लिए	अल्लाह ने

الَّذِيْٓ	اللّٰهَ	وَّاتَّقُوا	طَيِّبًا ص	حَلٰلًا	اللّٰهُ	رَزَقَكُمُ	مِمَّا	وَكُلُوْا
वो जो	अल्लाह से	और डरो	पाकीज़ा	हलाल	अल्लाह ने	रिज़्क़ दिया तुम्हें	उसमें से जो	और खाओ

فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ	بِاللَّغْوِ	اللّٰهُ	لَا يُؤَاخِذُكُمُ	مُؤْمِنُوْنَ (88)	بِهٖ	اَنْتُمْ
तुम्हारी क़समों में	लग़्व पर	अल्लाह	नहीं मुआख़ज़ा करता तुम्हारा	ईमान रखते हो	जिस पर	तुम

اِطْعَامُ	فَكَفَّارَتُهٗٓ	الْاَيْمَانَ ج	عَقَّدْتُّمُ	بِمَا	يُّؤَاخِذُكُمْ	وَلٰكِنْ
खाना खिलाना	तो कफ़्फ़ारा है उसका	क़समें	मज़बूत बांधी तुमने	उन पर जो	वो मुआख़ज़ा करता है तुम्हारा	और लेकिन

اَوْ	اَهْلِيْكُمْ	تُطْعِمُوْنَ	مَا	مِنْ اَوْسَطِ	مَسٰكِيْنَ	عَشَرَةِ
या	अपने घरवालों को	तुम खिलाते हो	जो	औसत दर्जे का	मिस्कीनों को	दस

فَصِيَامُ	يَجِدْ	لَّمْ	فَمَنْ	رَقَبَةٍ ط	تَحْرِيْرُ	اَوْ	كِسْوَتُهُمْ
तो रोज़े रखना हैं	पाए	ना	पस जो कोई	एक गर्दन का	आज़ाद करना	या	कपड़े पहनाना उन्हें

وَاحْفَظُوْٓا	حَلَفْتُمْ ط	اِذَا	اَيْمَانِكُمْ	كَفَّارَةُ	ذٰلِكَ	اَيَّامٍ ط	ثَلٰثَةِ
और हिफ़ाज़त किया करो	क़सम खाओ तुम	जब	तुम्हारी क़समों का	कफ़्फ़ारा है	ये	दिनों के	तीन

تَشْكُرُوْنَ (89)	لَعَلَّكُمْ	اٰيٰتِهٖ	لَكُمْ	اللّٰهُ	يُبَيِّنُ	كَذٰلِكَ	اَيْمَانَكُمْ ط
तुम शुक्र करो	ताकि तुम	अपनी आयात को	तुम्हारे लिए	अल्लाह	वाज़े करता है	इसी तरह	अपनी क़समों की

وَالْاَزْلَامُ	وَالْاَنْصَابُ	وَالْمَيْسِرُ	الْخَمْرُ	اِنَّمَا	اٰمَنُوْٓا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
और फ़ाल के तीर	और बुत	और जुआ	शराब (नशा)	बेशक	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो

اِنَّمَا	تُفْلِحُوْنَ (90)	لَعَلَّكُمْ	فَاجْتَنِبُوْهُ	الشَّيْطٰنِ	مِّنْ عَمَلِ	رِجْسٌ
बेशक	तुम फ़लाह पाओ	ताकि तुम	पस बचो उससे	शैतान के	अमल से हैं	नापाक हैं

فِي الْخَمْرِ	وَالْبَغْضَآءَ	الْعَدَاوَةَ	بَيْنَكُمُ	يُّوْقِعَ	اَنْ	الشَّيْطٰنُ	يُرِيْدُ
बवजह शराब (नशे)	और बुग़्ज़	अदावत	दर्मियान तुम्हारे	वो डाल दे	कि	शैतान	चाहता है

اَنْتُمْ	فَهَلْ	وَعَنِ الصَّلٰوةِ ج	اللّٰهِ	عَنْ ذِكْرِ	وَيَصُدَّكُمْ	وَالْمَيْسِرِ
तुम	तो क्या	और नमाज़ से	अल्लाह के	ज़िक्र से	और रोक दे तुम्हें	और जुए के

فَاِنْ	وَاحْذَرُوْا ۚ	الرَّسُوْلَ	وَ اَطِيْعُوا	اللّٰهَ	وَ اَطِيْعُوا	مُّنْتَهُوْنَ ۝٩١
फिर अगर	और डरो	रसूल की	और इताअत करो	अल्लाह की	और इताअत करो	बाज़ आने वाले हो

لَيْسَ	الْمُبِيْنُ ۝٩٢	الْبَلٰغُ	عَلٰى رَسُوْلِنَا	اَنَّمَا	فَاعْلَمُوْٓا	تَوَلَّيْتُمْ
नहीं है	खुल्लम-खुल्ला	पहुंचा देना है	हमारे रसूल के ज़िम्मे	बेशक	तो जान लो	मुंह मोड़ लिया तुमने

اِذَا مَا	طَعِمُوْٓا	فِيْمَا	جُنَاحٌ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا	اٰمَنُوْا	عَلَى الَّذِيْنَ
जब	उन्होंने खाया	उसमें जो	कोई गुनाह	नेक	और उन्होंने अमल किए	ईमान लाए	ऊपर उनके जो

ثُمَّ	وَّاٰمَنُوْا	اتَّقَوْا	ثُمَّ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا	وَّاٰمَنُوْا	اتَّقَوْا
फिर	और वो ईमान लाए	उन्होंने तक़वा किया	फिर	नेक	और उन्होंने अमल किए	और वो ईमान लाए	उन्होंने तक़वा किया

ع 12 7 2

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	الْمُحْسِنِيْنَ ۝٩٣ ع	يُحِبُّ	وَاللّٰهُ	وَّاَحْسَنُوْا ؕ	اتَّقَوْا
ऐ लोगो जो	नेक काम करने वालों को	वो पसंद करता है	और अल्लाह	और उन्होंने नेक काम किए	उन्होंने तक़वा किया

اَيْدِيْكُمْ	تَنَالُهٗٓ	مِّنَ الصَّيْدِ	بِشَيْءٍ	اللّٰهُ	لَيَبْلُوَنَّكُمُ	اٰمَنُوْا
हाथ तुम्हारे	पा लेंगे उसे	शिकार में से	साथ एक चीज़ के	अल्लाह	अलबत्ता ज़रूर आज़माएगा तुम्हें	ईमान लाए हो

اعْتَدٰى	فَمَنِ	بِالْغَيْبِ	يَّخَافُهٗ	مَنْ	اللّٰهُ	لِيَعْلَمَ	وَرِمَاحُكُمْ
ज़्यादती करे	तो जो कोई	ग़ायबाना तौर पर	डरता है उससे	कौन	अल्लाह	ताकि जान ले	और नेज़े तुम्हारे

لَا تَقْتُلُوا	اٰمَنُوْا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اَلِيْمٌ ۝٩٤	عَذَابٌ	فَلَهٗ	بَعْدَ ذٰلِكَ
ना तुम मारो	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	दर्दनाक	अज़ाब है	तो उसके लिए	बाद उसके

فَجَزَآءٌ	مُّتَعَمِّدًا	مِنْكُمْ	قَتَلَهٗ	وَمَنْ	حُرُمٌ	وَاَنْتُمْ	الصَّيْدَ
तो बदला है	जान-बूझ कर	तुम में से	मारा उसे	और जिसने	एहराम में हो	जब कि तुम	शिकार को

هَدْيًا	مِّنْكُمْ	ذَوَا عَدْلٍ	بِهٖ	يَحْكُمُ	مِنَ النَّعَمِ	قَتَلَ	مَا	مِّثْلُ
बतौर क़ुर्बानी के	तुम में से	दो अदल वाले	उसका	फ़ैसला करेंगे	चौपायों में से	उसने मारा	उसके जो	मानिंद

ذٰلِكَ	عَدْلُ	اَوْ	مَسٰكِيْنَ	طَعَامُ	كَفَّارَةٌ	اَوْ	الْكَعْبَةِ	بٰلِغَ
उसके	बराबर	या	चंद मिस्कीनों का	खाना खिलाना	कफ़्फ़ारा है	या	काबा तक	पहुंचने वाली

وَمَنْ	سَلَفَ ؕ	عَمَّا	اللّٰهُ	عَفَا	اَمْرِهٖ ؕ	وَبَالَ	لِّيَذُوْقَ	صِيَامًا
और जो कोई	गुज़र चुका	उससे जो	अल्लाह ने	दरगुज़र किया	अपने काम का	वबाल	ताकि वो चखें	रोज़े रखना है

اُحِلَّ	ذُوانْتِقَامٍ (95)	عَزِيْزٌ	وَاللّٰهُ	مِنْهُ ؕ	اللّٰهُ	فَيَنْتَقِمُ	عَادَ
हलाल किया गया है	इंतिक़ाम लेने वाला है	बहुत ज़बरदस्त है	और अल्लाह	उससे	अल्लाह	तो इंतिक़ाम लेगा	लौटा

وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ	لَّكُمْ	مَتَاعًا	وَطَعَامُهٗ	الْبَحْرِ	صَيْدُ	لَكُمْ
और क़ाफ़िले के लिए	तुम्हारे लिए	फायदामंद है	और खाना उसका	समुन्दर का	शिकार	तुम्हारे लिए

اللّٰهَ	وَاتَّقُوا	حُرُمًا ؕ	مَادُمْتُمْ	الْبَرِّ	صَيْدُ	عَلَيْكُمْ	وَحُرِّمَ
अल्लाह से	और डरो	एहराम में	जब तक हो तुम	खुश्की का	शिकार	तुम पर	और हराम किया गया

الْحَرَامَ	الْبَيْتَ	الْكَعْبَةَ	اللّٰهُ	جَعَلَ	تُحْشَرُوْنَ (96)	اِلَيْهِ	الَّذِيْٓ
हुरमत वाला	घर	काबा को	अल्लाह ने	बनाया	तुम इकट्ठे किए जाओगे	तरफ़ उसी के	वो जो

ذٰلِكَ	وَالْقَلَآئِدَ ؕ	وَالْهَدْيَ	الْحَرَامَ	وَالشَّهْرَ	لِّلنَّاسِ	قِيٰمًا
ये (इसलिए)	और पट्टे वाले जानवरों को	और क़ुर्बानी को	हराम को	और माहे	लोगों के लिए	क़याम का ज़रिया

فِي الْاَرْضِ	وَمَا	فِي السَّمٰوٰتِ	مَا	يَعْلَمُ	اللّٰهَ	اَنَّ	لِتَعْلَمُوْٓا
ज़मीन में है	और जो कुछ	आसमानों में है	जो कुछ	वो जानता है	अल्लाह	बेशक	ताकि तुम जान लो

شَدِيْدُ	اللّٰهَ	اَنَّ	اِعْلَمُوْٓا	عَلِيْمٌ (97)	شَيْءٍ	بِكُلِّ	اللّٰهَ	وَاَنَّ
सख़्त	अल्लाह	बेशक	जान लो	ख़ूब जानने वाला है	चीज़ को	हर	अल्लाह	और बेशक

عَلَى الرَّسُوْلِ	مَا	رَّحِيْمٌ (98) ؕ	غَفُوْرٌ	اللّٰهَ	وَاَنَّ	الْعِقَابِ
रसूल पर	नहीं है	निहायत रहम करने वाला है	बहुत बख़्शने वाला है	अल्लाह	और बेशक	सज़ा वाला है

اِلَّا	الْبَلٰغُ ؕ	وَاللّٰهُ	يَعْلَمُ	مَا	تُبْدُوْنَ	وَمَا	تَكْتُمُوْنَ (99)
मगर	पहुंचा देना	और अल्लाह	जानता है	जो	तुम ज़ाहिर करते हो	और जो	तुम छुपाते हो

قُلْ	لَّا يَسْتَوِى	الْخَبِيْثُ	وَالطَّيِّبُ	وَلَوْ	اَعْجَبَكَ	كَثْرَةُ	الْخَبِيْثِ ۚ
कह दीजिए	नहीं बराबर हो सकते	नापाक	और पाक	और अगरचे	अच्छी लगे तुम्हें	कसरत	नापाक की

ع 13 7 3

فَاتَّقُوا	اللّٰهَ	يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ	لَعَلَّكُمْ	تُفْلِحُوْنَ (100) ع	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
पस डरो	अल्लाह से	ऐ अक़्ल वालो	ताकि तुम	तुम फ़लाह पा जाओ	ऐ लोगो जो

اٰمَنُوْا	لَا تَسْـَٔلُوْا	عَنْ اَشْيَآءَ	اِنْ	تُبْدَ	لَكُمْ	تَسُؤْكُمْ ۚ
ईमान लाए हो	ना तुम सवाल करो	ऐसी चीज़ों के बारे में	अगर	वो ज़ाहिर कर दी जाएं	तुम्हारे लिए	बुरी लगें तुम्हें

وَاِنْ	تَسْـَٔلُوْا	عَنْهَا	حِيْنَ	يُنَزَّلُ	الْقُرْاٰنُ	تُبْدَ	لَكُمْ ؕ
और अगर	तुम सवाल करोगे	उनके बारे में	जिस वक़्त	नाज़िल किया जाता है	क़ुरआन	वो ज़ाहिर कर दी जाएंगी	तुम्हारे लिए

عَفَا	اللّٰهُ	عَنْهَا ؕ	وَاللّٰهُ	غَفُوْرٌ	حَلِيْمٌ (101)	قَدْ	سَاَلَهَا
दरगुज़र किया	अल्लाह ने	उनसे	और अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	बहुत बुर्दबार है	तहक़ीक़	सवाल किया था उनके बारे में

قَوْمٌ	مِّنْ قَبْلِكُمْ	ثُمَّ	اَصْبَحُوْا	بِهَا	كٰفِرِيْنَ (102)	مَا	جَعَلَ
एक क़ौम ने	तुम से पहले	फिर	वो हो गए	उनका	इंकार करने वाले	नहीं	बनाया

اللّٰهُ	مِنْۢ بَحِيْرَةٍ	وَّلَا	سَآئِبَةٍ	وَّلَا	وَصِيْلَةٍ	وَّلَا حَامٍ ۙ	وَّلٰكِنَّ
अल्लाह ने	कोई बहीरा	और ना	कोई साएबा	और ना	कोई वसीला	और ना कोई हाम	और लेकिन

الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	يَفْتَرُوْنَ	عَلَى اللّٰهِ	الْكَذِبَ ؕ	وَاَكْثَرُهُمْ	لَا يَعْقِلُوْنَ (103)
वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	वो गढ़ लेते हैं	अल्लाह पर	झूठ	और अक्सर उनके	नहीं वो अक़्ल रखते

وَاِذَا	قِيْلَ	لَهُمْ	تَعَالَوْا	اِلٰى	مَآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ
और जब	कहा जाता है	उन्हें	आओ	तरफ़	उसके जो	नाज़िल किया	अल्लाह ने

وَاِلَى الرَّسُوْلِ	قَالُوْا	حَسْبُنَا	مَا	وَجَدْنَا	عَلَيْهِ	اٰبَآءَنَا ؕ
और तरफ़ रसूल के	वो कहते हैं	काफ़ी है हमें	जो	पाया हमने	उस पर	अपने आबा ओ अजदाद को

اَوَلَوْ	كَانَ	اٰبَآؤُهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ	شَيْـًٔا	وَّلَا	يَهْتَدُوْنَ (104)
क्या भला अगरचे	हों	आबा ओ अजदाद उनके	ना वो इल्म रखते	कुछ भी	और ना	वो हिदायत याफ़्ता हों

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	عَلَيْكُمْ	اَنْفُسَكُمْ ۚ	لَا يَضُرُّكُمْ	مَّنْ	ضَلَّ
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	लाज़िम है तुम पर (बचाना)	अपनी जानों को	ना नुक़्सान देगा तुम्हें	जो	भटक गया

اِذَا	اهْتَدَيْتُمْ ؕ	اِلَى اللّٰهِ	مَرْجِعُكُمْ	جَمِيْعًا	فَيُنَبِّئُكُمْ	بِمَا	كُنْتُمْ
जब	हिदायत पा चुके तुम	तरफ़ अल्लाह ही के	लौटना है तुम्हारा	सबका	फिर वो बता देगा तुम्हें	वो जो	थे तुम

تَعْمَلُوْنَ (105)	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	شَهَادَةُ	بَيْنِكُمْ	اِذَا	حَضَرَ
तुम अमल करते	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	गवाही हो	तुम्हारे दर्मियान	जब	हाज़िर हो

اَحَدَكُمُ	الْمَوْتُ	حِيْنَ	الْوَصِيَّةِ	اثْنٰنِ	ذَوَا عَدْلٍ	مِّنْكُمْ	اَوْ
तुम में से किसी एक को	मौत	वक़्त	वसीयत के	दो	अदल वालों की	तुम में से	या

اٰخَرٰنِ	مِنْ غَيْرِكُمْ	اِنْ	اَنْتُمْ	ضَرَبْتُمْ	فِى الْاَرْضِ	فَاَصَابَتْكُمْ
दो और	तुम्हारे इलावा से	अगर	तुम	सफ़र कर रहे हो तुम	ज़मीन में	फिर पहुंचे तुम्हें

مُّصِيْبَةُ	الْمَوْتِ ؕ	تَحْبِسُوْنَهُمَا	مِنْ بَعْدِ	الصَّلٰوةِ	فَيُقْسِمٰنِ
मुसीबत	मौत की	तुम रोक लो उन दोनों को	बाद	नमाज़ के	फिर वो दोनों क़समें खाऐं

بِاللّٰهِ	اِنِ	ارْتَبْتُمْ	لَا نَشْتَرِىْ	بِهٖ	ثَمَنًا	وَّلَوْ	كَانَ
अल्लाह की	अगर	शक करो तुम	कि ना हम लेंगे	साथ उसके	कोई क़ीमत	और अगरचे	हो वो

ذَا قُرْبٰى ۙ	وَلَا	نَكْتُمُ	شَهَادَةَ ۙ	اللّٰهِ	اِنَّاۤ	اِذًا	لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ (106)
रिश्तेदार	और ना	हम छुपाऐंगे	गवाही को	अल्लाह की	बेशक हम	तब	अलबत्ता गुनाहगारों में से होंगे

يَقُوْمٰنِ	فَاٰخَرٰنِ	اِثْمًا	اسْتَحَقَّآ	اَنَّهُمَا	عَلٰٓى	عُثِرَ	فَاِنْ
वो दोनों खड़े होंगे	पस दो दूसरे	गुनाह के	वो मुस्तहिक़ हुए हैं	कि बेशक वो दोनों	उस पर	इत्तिला हो जाए	फिर अगर

فَيُقْسِمٰنِ	الْاَوْلَيٰنِ	عَلَيْهِمُ	اسْتَحَقَّ	مِنَ الَّذِيْنَ	مَقَامَهُمَا
फिर वो दोनों क़समें खाएंगे	दो क़रीब-तरीन	जिन पर	हक़ साबित हो गया	उन लोगों में से	उन दोनों की जगह

اِنَّآ	اعْتَدَيْنَآ ۖ	وَمَا	مِنْ شَهَادَتِهِمَا	اَحَقُّ	لَشَهَادَتُنَآ	بِاللّٰهِ
बेशक हम	ज़्यादती की हमने	और नहीं	उन दोनों की गवाही से	ज़्यादा सच्ची है	अलबत्ता गवाही हमारी	अल्लाह की

بِالشَّهَادَةِ	يَّاْتُوْا	اَنْ	اَدْنٰٓى	ذٰلِكَ	لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿107﴾	اِذًا
गवाही को	वो लाएं	कि	ज़्यादा क़रीब है	ये	अलबत्ता ज़ालिमों में से होंगे	तब

اَيْمَانِهِمْ ؕ	بَعْدَ	اَيْمَانٌۢ	تُرَدَّ	اَنْ	يَّخَافُوْٓا	اَوْ	عَلٰى وَجْهِهَآ
उन (विरसा) की क़समों के	बाद	(उनकी) क़समें	रद्द कर दी जाएंगी	कि	वो डरें	या	उसके (असल) रुख़ पर

14 ع 8 4

الْفٰسِقِيْنَ ﴿108﴾ ع	الْقَوْمَ	لَا يَهْدِي	وَاللّٰهُ	وَاسْمَعُوْا ؕ	اللّٰهَ	وَاتَّقُوا
जो फासिक़ हैं	उन लोगों को	नहीं वो हिदायत देता	और अल्लाह	और सुनो	अल्लाह से	और डरो

قَالُوْا	اُجِبْتُمْ ؕ	مَاذَآ	فَيَقُوْلُ	الرُّسُلَ	اللّٰهُ	يَجْمَعُ	يَوْمَ
वो कहेंगे	जवाब दिए गए थे तुम	क्या	फिर वो कहेगा	रसूलों को	अल्लाह	जमा करेगा	जिस दिन

اللّٰهُ	قَالَ	اِذْ	الْغُيُوْبِ ﴿109﴾	عَلَّامُ	اَنْتَ	اِنَّكَ	لَنَا ؕ	لَا عِلْمَ
अल्लाह	फरमाएगा	जब	ग़ैबों का	ख़ूब जानने वाला	तू ही है	बेशक तू	हमें	नहीं कोई इल्म

وقف لازم

اِذْ	وَعَلٰى وَالِدَتِكَ م	عَلَيْكَ	نِعْمَتِيْ	اذْكُرْ	يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ
जब	और तेरी वालिदा पर	तुझ पर है	मेरी नेअमत (जो)	याद करो	ऐ ईसा इबने मरियम

وَكَهْلًا ج	فِي الْمَهْدِ	النَّاسَ	تُكَلِّمُ	بِرُوْحِ الْقُدُسِ قف	اَيَّدْتُّكَ
और अधेड़ उम्र में	गहवारे में	लोगों से	तू कलाम करता था	साथ रुहुल क़ुदुस के	ताईद की मैंने तेरी

وَاِذْ	عَلَّمْتُكَ	الْكِتٰبَ	وَالْحِكْمَةَ	وَالتَّوْرٰىةَ	وَالْاِنْجِيْلَ ج	وَاِذْ
और जब	तालीम दी मैंने तुझे	किताब	और हिक्मत की	और तौरात	और इंजील की	और जब

تَخْلُقُ	مِنَ الطِّيْنِ	كَهَيْـَٔةِ	الطَّيْرِ	بِاِذْنِيْ	فَتَنْفُخُ	فِيْهَا
तू बनाता था	मिट्टी से	मानिंद शक्ल	परिंदे की	मेरे इज़्न से	फिर तू फूंक मारता था	उस में

فَتَكُوْنُ	طَيْرًا	بِاِذْنِيْ	وَتُبْرِئُ	الْاَكْمَهَ	وَالْاَبْرَصَ	بِاِذْنِيْ ج
फिर वो हो जाता था	परिंदा	मेरे इज़्न से	और तू अच्छा कर देता था	पैदाइशी अंधे को	और बर्स वाले को	मेरे इज़्न से

وَاِذْ	تُخْرِجُ	الْمَوْتٰى	بِاِذْنِيْ ج	وَاِذْ	كَفَفْتُ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
और जब	तू निकालता था	मुर्दों को	मेरे इज़्न से	और जब	रोका मैंने	बनी इस्राईल को

عَنْكَ	اِذْ	جِئْتَهُمْ	بِالْبَيِّنٰتِ	فَقَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	مِنْهُمْ
तुझसे	जब	लाया तू उनके पास	वाज़ेह निशानियां	तो कहा	उन्होंने जिन्होंने	कुफ़्र किया	उनमें से

اِنْ	هٰذَآ	اِلَّا	سِحْرٌ	مُّبِيْنٌ (110)	وَاِذْ	اَوْحَيْتُ	اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ
नहीं है	ये	मगर	जादू	खुल्लम-खुल्ला	और जब	वही की मैंने	तरफ़ हवारियों के

اَنْ	اٰمِنُوْا	بِيْ	وَبِرَسُوْلِيْ ج	قَالُوْٓا	اٰمَنَّا	وَاشْهَدْ	بِاَنَّنَا
ये कि	ईमान लाओ	मुझ पर	और मेरे रसूल पर	उन्होंने कहा	ईमान लाए हम	और गवाह रह	बेशक हम

مُسْلِمُوْنَ (111)	اِذْ	قَالَ	الْحَوَارِيُّوْنَ	يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ	هَلْ
मुसलमान हैं	जब	कहा	हवारियों ने	ऐ ईसा इबने मरयम	क्या

يَسْتَطِيْعُ	رَبُّكَ	اَنْ	يُّنَزِّلَ	عَلَيْنَا	مَآئِدَةً	مِّنَ السَّمَآءِ ط	قَالَ
इस्तिताअत रखता है	रब तेरा	कि	वो उतारे	हम पर	एक दस्तरख़ान	आसमान से	उसने कहा

اتَّقُوا	اللّٰهَ	اِنْ	كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ (112)	قَالُوْا	نُرِيْدُ	اَنْ
डरो	अल्लाह से	अगर	हो तुम	मोमिन	उन्होंने कहा	हम चाहते हैं	कि

نَّاْكُلَ	مِنْهَا	وَتَطْمَئِنَّ	قُلُوْبُنَا	وَنَعْلَمَ	اَنْ	قَدْ	صَدَقْتَنَا
हम खाएं	उससे	और मुत्मइन हो जाएं	दिल हमारे	और हम जान लें	कि	तहक़ीक़	सच कहा तूने हमसे

الربع

وَنَكُوْنَ	عَلَيْهَا	مِنَ الشّٰهِدِيْنَ (113)	قَالَ	عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ	اللّٰهُمَّ
और हम हो जाएं	उस पर	गवाहों में से	कहा	ईसा इबने मरयम ने	ऐ अल्लाह

رَبَّنَآ	اَنْزِلْ	عَلَيْنَا	مَآئِدَةً	مِّنَ السَّمَآءِ	تَكُوْنُ	لَنَا	عِيْدًا
ऐ हमारे रब	उतार	हम पर	एक दस्तरख़्वान	आसमान से	वो हो जाए	हमारे लिए	ईद

لِّاَوَّلِنَا	وَاٰخِرِنَا	وَاٰيَةً	مِّنْكَ ج	وَارْزُقْنَا	وَاَنْتَ
वास्ते हमारे पहलों के	और हमारे पिछलों के	और एक निशानी	तेरी तरफ़ से	और रिज़्क़ दे हमें	और तू

خَيْرُ	الرّٰزِقِيْنَ (114)	قَالَ	اللّٰهُ	اِنِّيْ	مُنَزِّلُهَا	عَلَيْكُمْ ج
बेहतर है	सब रिज़्क़ देने वालों से	फ़रमाया	अल्लाह ने	बेशक मैं	नाज़िल करने वाला हूं उसे	तुम पर

فَمَنْ	يَّكْفُرْ	بَعْدُ	مِنْكُمْ	فَاِنِّيْٓ	اُعَذِّبُهٗ	عَذَابًا
तो जो कोई	कुफ़्र करेगा	बाद उसके	तुम में से	तो बेशक मैं	मैं अज़ाब दूंगा उसे	ऐसा अज़ाब

ع 15 7 5

لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ	اَحَدًا	مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ (115) ع	وَاِذْ	قَالَ	اللّٰهُ
नहीं मैं अज़ाब दूंगा वो	किसी एक को	तमाम जहान वालों में से	और जब	फरमाएगा	अल्लाह

يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ	ءَاَنْتَ	قُلْتَ	لِلنَّاسِ	اتَّخِذُوْنِيْ	وَاُمِّيَ
ऐ ईसा इबने मरियम	क्या तूने	कहा था तूने	लोगों से	बना लो मुझे	और मेरी मां को

اِلٰهَيْنِ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ ط	قَالَ	سُبْحٰنَكَ	مَا	يَكُوْنُ	لِيْٓ	اَنْ
दो इलाह	सिवाए	अल्लाह के	वो कहेंगे	पाक है तू	नहीं	है	मेरे लिए	कि

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

اَقُوْلَ	مَا	لَيْسَ	لِيْ ق	بِحَقٍّ ط	اِنْ	كُنْتُ	قُلْتُهٗ	فَقَدْ
मैं कहूं (वो बात)	जिसका	नहीं	मुझे	कोई हक़	अगर	था मैं	कहता मैं उसको	तो तहक़ीक़

عَلِمْتَهٗ ؕ	تَعْلَمُ	مَا	فِيْ نَفْسِيْ	وَلَآ	اَعْلَمُ	مَا	فِيْ نَفْسِكَ ؕ
तू जान लेता उसे	तू जानता है	जो	मेरे नफ़्स में है	और नहीं	मैं जानता	जो	तेरे नफ़्स में है

اِنَّكَ	اَنْتَ	عَلَّامُ	الْغُيُوْبِ (116)	مَا	قُلْتُ	لَهُمْ	اِلَّا	مَآ
बेशक तू	तू ही है	ख़ूब जानने वाला	ग़ैबों का	नहीं	कहा था मैंने	उन्हें	मगर	जो

اَمَرْتَنِيْ	بِهٖٓ	اَنِ	اعْبُدُوا	اللّٰهَ	رَبِّيْ	وَرَبَّكُمْ ج	وَكُنْتُ
हुक्म दिया तूने मुझे	जिसका	कि	इबादत करो	अल्लाह की	जो रब है मेरा	और रब है तुम्हारा	और था मैं

عَلَيْهِمْ	شَهِيْدًا	مَّا دُمْتُ	فِيْهِمْ ج	فَلَمَّا	تَوَفَّيْتَنِيْ	كُنْتَ
उन पर	गवाह	जब तक मैं रहा	उनमें	फिर जब	फौत कर दिया तूने मुझे	था तू

اَنْتَ	الرَّقِيْبَ	عَلَيْهِمْ ؕ	وَاَنْتَ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	شَهِيْدٌ (117)	اِنْ
तू ही	निगरान	उन पर	और तू	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब गवाह है	अगर

تُعَذِّبْهُمْ	فَاِنَّهُمْ	عِبَادُكَ ج	وَاِنْ	تَغْفِرْ	لَهُمْ	فَاِنَّكَ	اَنْتَ
तू अज़ाब दे उन्हें	तो बेशक वो	बंदे हैं तेरे	और अगर	तू बख़्श दे	उन्हें	तो बेशक तू	तू ही है

الْعَزِيْزُ	الْحَكِيْمُ (118)	قَالَ	اللّٰهُ	هٰذَا	يَوْمُ	يَنْفَعُ	الصّٰدِقِيْنَ
बहुत ज़बरदस्त	बहुत हिक्मत वाला	फ़रमाएगा	अल्लाह	ये	दिन है	नफ़ा देगा	सच्चों को

صِدْقُهُمْ ؕ	لَهُمْ	جَنّٰتٌ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ	خٰلِدِيْنَ
सच उनका	उन के लिए	बाग़ात हैं	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	हमेशा रहने वाले हैं

فِيْهَآ	اَبَدًا ؕ	رَضِيَ	اللّٰهُ	عَنْهُمْ	وَرَضُوْا	عَنْهُ ؕ	ذٰلِكَ
उनमें	अबद तक/हमेशा	राज़ी हो गया	अल्लाह	उनसे	और वो राज़ी हो गए	उससे	यही है

الْفَوْزُ	الْعَظِيْمُ (119)	لِلّٰهِ	مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَمَا
कामयाबी	बहुत बड़ी	अल्लाह ही के लिए है	बादशाहत	आसमानों की	और ज़मीन की	और जो कुछ

16 ع 5 6

فِيْهِنَّ ؕ	وَهُوَ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	قَدِيْرٌ ﴿120﴾ ع
उनमें है	और वो	ऊपर	हर	चीज़ के	बहुत क़ुदरत रखने वाला है

آيَاتُهَا: 165 — 6 سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ 55 — رُكُوْعَاتُهَا: 20

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ	لِلّٰهِ	الَّذِيْ	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	وَجَعَلَ	الظُّلُمٰتِ
सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	वो जिसने	पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	और उसने बनाया	अंधेरों
وَالنُّوْرَ ۬ؕ	ثُمَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِرَبِّهِمْ	يَعْدِلُوْنَ ﴿1﴾	هُوَ	الَّذِيْ
और रोशनी को	फिर	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	साथ अपने रब के	वो बराबर क़रार देते हैं	वो ही है	जिसने
خَلَقَكُمْ	مِّنْ طِيْنٍ	ثُمَّ	قَضٰى	اَجَلًا ؕ	وَاَجَلٌ	مُّسَمًّى	عِنْدَهٗ
पैदा किया तुम्हें	मिट्टी से	फिर	उसने मुक़र्रर की	एक मुद्दत	और एक (और) मुद्दत	मुक़र्रर है	उसके यहां

ثُمَّ	اَنْتُمْ	تَمْتَرُوْنَ ﴿2﴾	وَهُوَ	اللّٰهُ	فِي السَّمٰوٰتِ	وَفِي الْاَرْضِ ؕ
फिर (भी)	तुम	तुम शक करते हो	और वो है	अल्लाह	आसमानों में	और ज़मीन में

يَعْلَمُ	سِرَّكُمْ	وَجَهْرَكُمْ	وَيَعْلَمُ	مَا	تَكْسِبُوْنَ ﴿3﴾	وَمَا	تَاْتِيْهِمْ
वो जानता है	पोशीदा तुम्हारा	और ज़ाहिर तुम्हारा	और वो जानता है	जो	तुम कमाते हो	और नहीं	आती उनके पास
مِّنْ اٰيَةٍ	مِّنْ اٰيٰتِ	رَبِّهِمْ	اِلَّا	كَانُوْا	عَنْهَا	مُعْرِضِيْنَ ﴿4﴾	فَقَدْ
कोई निशानी	निशानियों में से	उनके रब की	मगर	हैं वो	उससे	ऐराज़ करने वाले	पस तहक़ीक़
كَذَّبُوْا	بِالْحَقِّ	لَمَّا	جَآءَهُمْ ؕ	فَسَوْفَ	يَاْتِيْهِمْ	اَنْۢبٰٓؤُا	مَا
उन्होंने झुठलाया	हक़ को	जब	वो आया उनके पास	पस अनक़रीब	आएंगी उनके पास	ख़बरें	उसकी जो

كَانُوْا	بِهٖ	يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿5﴾	اَلَمْ	يَرَوْا	كَمْ	اَهْلَكْنَا
थे वो	जिसका	वो मज़ाक़ उड़ाते	क्या नहीं	उन्होंने देखा	कितनी ही	हलाक कर दीं हमने

نُمَكِّنْ	لَمْ	مَا	فِي الْاَرْضِ	مَّكَّنّٰهُمْ	مِّنْ قَرْنٍ	مِنْ قَبْلِهِمْ
हमने क़ुदरत दी	नहीं	वो जो	ज़मीन में	क़ुदरत दी थी हमने उन्हें	क़ौमें	उनसे पहले

تَجْرِيْ	الْاَنْهٰرَ	وَّ جَعَلْنَا	مِّدْرَارًا ص	عَلَيْهِمْ	السَّمَآءَ	وَ اَرْسَلْنَا	لَّكُمْ
जो बहती थीं	नहरें	और बनाईं हमने	बहुत बरसने वाला	उन पर	आसमान को	और भेजा हमने	तुम्हें

مِنْۢ بَعْدِهِمْ	وَ اَنْشَاْنَا	بِذُنُوْبِهِمْ	فَاَهْلَكْنٰهُمْ	مِنْ تَحْتِهِمْ
बाद उनके	और उठाईं हमने	बवजह उनके गुनाहों के	पस हलाक कर दिया हमने उन्हें	उनके नीचे से

فِيْ قِرْطَاسٍ	كِتٰبًا	عَلَيْكَ	نَزَّلْنَا	وَ لَوْ	اٰخَرِيْنَ (6)	قَرْنًا
काग़ज में	एक किताब	आप पर	नाज़िल करते हम	और अगर	दूसरी	क़ौमें

اِلَّا	هٰذَآ	اِنْ	كَفَرُوْٓا	الَّذِيْنَ	لَقَالَ	بِاَيْدِيْهِمْ	فَلَمَسُوْهُ
मगर	ये	नहीं है	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	अलबत्ता कहते	अपने हाथों से	फिर वो छू लेते उसे

وَ لَوْ	مَلَكٌ ط	عَلَيْهِ	اُنْزِلَ	لَوْلَآ	وَقَالُوْا	مُّبِيْنٌ (7)	سِحْرٌ
और अगर	कोई फ़रिश्ता	उस पर	उतारा गया	क्यों नहीं	और उन्होंने कहा	खुल्लम-खुल्ला/वाज़ेह	जादू

جَعَلْنٰهُ	وَ لَوْ	لَا يُنْظَرُوْنَ (8)	ثُمَّ	الْاَمْرُ	لَّقُضِيَ	مَلَكًا	اَنْزَلْنَا
बनाते हम उसे	और अगर	ना वो मोहलत दिए जाते	फिर	मामले का	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता	कोई फ़रिश्ता	उतारते हम

يَلْبِسُوْنَ (9)	مَّا	عَلَيْهِمْ	وَّ لَلَبَسْنَا	رَجُلًا	لَّجَعَلْنٰهُ	مَلَكًا
वो शुबह करते हैं	जो	उन पर	और अलबत्ता मुशतबा कर देते हम	आदमी ही	अलबत्ता बनाते हम उसे	एक फ़रिश्ता

سَخِرُوْا	بِالَّذِيْنَ	فَحَاقَ	مِّنْ قَبْلِكَ	بِرُسُلٍ	اسْتُهْزِئَ	وَ لَقَدِ
तमसख़ुर किया	उनको जिन्होंने	तो घेर लिया	आपसे पहले	कई रसूलों का	मज़ाक़ उड़ाया गया	और अलबत्ता तहक़ीक़

فِي الْاَرْضِ	سِيْرُوْا	قُلْ	يَسْتَهْزِءُوْنَ ع (10)	بِهٖ	كَانُوْا	مَّا	مِنْهُمْ	ع 1 10 7
ज़मीन में	चलो फिरो	कह दीजिए	वो मज़ाक़ उड़ाते	जिसका	थे वो	उसने जो	उनमें से	

ثُمَّ	انْظُرُوْا	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ	الْمُكَذِّبِيْنَ (11)	قُلْ	لِّمَنْ
फिर	देखो	किस तरह	हुआ	अंजाम	झुठलाने वालों का	कह दीजिए	किसके लिए है

مَّا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ط	قُلْ	لِّلّٰهِ ط	كَتَبَ	عَلٰى نَفْسِهِ
जो कुछ	आसमानों में	और ज़मीन में है	कह दीजिए	अल्लाह ही के लिए है	उसने लिख दी	अपने नफ़्स पर

الرَّحْمَةَ ط	لَيَجْمَعَنَّكُمْ	اِلٰى يَوْمِ	الْقِيٰمَةِ	لَا رَيْبَ	فِيْهِ ط
रहमत	अलबत्ता वो ज़रूर जमा करेगा तुम्हें	तरफ़ दिन	क़यामत के	नहीं कोई शक	उसमें

اَلَّذِيْنَ	خَسِرُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ	فَهُمْ	لَا يُؤْمِنُوْنَ (12)	وَلَهٗ	مَا
वो जिन्होंने	नुक़्सान में डाला	अपने नफ़्सों को	पस वो	नहीं वो ईमान लाएंगे	और उसी के लिए है	जो

سَكَنَ	فِي الَّيْلِ	وَالنَّهَارِ ط	وَهُوَ	السَّمِيْعُ	الْعَلِيْمُ (13)	قُلْ
साकिन है (ठहरा हुआ)	रात में	और दिन में	और वो	ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	कह दीजिए

اَغَيْرَ	اللّٰهِ	اَتَّخِذُ	وَلِيًّا	فَاطِرِ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَهُوَ
क्या सिवाए	अल्लाह के	मैं बना लूं	कोई दोस्त	पैदा करने वाला है	आसमानों	और ज़मीन का	और वो

يُطْعِمُ	وَلَا	يُطْعَمُ ط	قُلْ	اِنِّيْٓ	اُمِرْتُ	اَنْ	اَكُوْنَ
वो खिलाता है	और नहीं	वो खिलाया जाता	कह दीजिए	बेशक मैं	हुक्म दिया गया हूं मैं	कि	मैं हो जाऊं

اَوَّلَ	مَنْ	اَسْلَمَ	وَلَا	تَكُوْنَنَّ	مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (14)	قُلْ
सबसे पहला	जो	इस्लाम लाया	और ना	हरगिज़ आप हों	मुशरिकीन में से	कह दीजिए

اِنِّيْٓ	اَخَافُ	اِنْ	عَصَيْتُ	رَبِّيْ	عَذَابَ	يَوْمٍ عَظِيْمٍ (15)
बेशक मैं	मैं डरता हूं	अगर	नाफ़रमानी की मैं ने	अपने रब की	अज़ाब से	बड़े दिन के

مَنْ	يُّصْرَفْ	عَنْهُ	يَوْمَئِذٍ	فَقَدْ	رَحِمَهٗ ط	وَذٰلِكَ	الْفَوْزُ
जो कोई	फेर दिया गया	उससे (अज़ाब)	उस दिन	तो तहक़ीक़	उसने रहम किया उस पर	और यही है	कामयाबी

لَهٗٓ	كَاشِفَ	فَلَا	بِضُرٍّ	اللّٰهُ	يَّمْسَسْكَ	وَاِنْ	الْمُبِيْنُ ⑯
उसे	कोई दूर करने वाला	तो नहीं	कोई नुक़सान	अल्लाह	पहुंचाए आपको	और अगर	खुली / वाज़ेह

شَيْءٍ	كُلِّ	عَلٰى	فَهُوَ	بِخَيْرٍ	يَّمْسَسْكَ	وَاِنْ	هُوَ ؕ	اِلَّا
चीज़ के	हर	ऊपर	तो वो	कोई भलाई	वो पहुंचाए आपको	और अगर	वो ही	मगर

الْحَكِيْمُ	وَهُوَ	عِبَادِهٖ ؕ	فَوْقَ	الْقَاهِرُ	وَهُوَ	قَدِيْرٌ ⑰
बहुत हिक्मत वाला है	और वो	अपने बंदों के	ऊपर	ग़लबा रखने वाला है	और वो	खूब क़ुदरत रखने वाला है

اللّٰهُ ۙ قف	قُلِ	شَهَادَةً ؕ	اَكْبَرُ	شَيْءٍ	اَيُّ	قُلْ	الْخَبِيْرُ ⑱
अल्लाह	कह दीजिए	गवाही में	सब से बड़ी	चीज़ है	कौन सी	कह दीजिए	खूब बाख़बर है

لِاُنْذِرَكُمْ	الْقُرْاٰنُ	هٰذَا	اِلَيَّ	وَاُوْحِيَ	وَبَيْنَكُمْ قف	بَيْنِيْ	شَهِيْدٌۢ ۙ
ताकि मैं डराऊं तुम्हें	क़ुरआन	ये	मेरी तरफ़	और वही किया गया	और दर्मियान तुम्हारे	दर्मियान मेरे	गवाह है

اللّٰهِ	مَعَ	اَنَّ	لَتَشْهَدُوْنَ	اَئِنَّكُمْ	بَلَغَ ؕ	وَمَنْۢ	بِهٖ
अल्लाह के	साथ	बेशक	अलबत्ता तुम गवाही देते हो	क्या बेशक तुम	ये पहुंचे	और जिसे	साथ इसके

اِلٰهٌ	هُوَ	اِنَّمَا	قُلْ	لَّآ اَشْهَدُ ج	قُلْ	اُخْرٰى ؕ	اٰلِهَةً
इलाह है	वो	बेशक	कह दीजिए	नहीं मैं गवाही देता	कह दीजिए	दूसरे	इलाह हैं

اٰتَيْنٰهُمُ	اَلَّذِيْنَ	تُشْرِكُوْنَ ⑲ م	مِّمَّا	بَرِيْٓءٌ	وَّاِنَّنِيْ	وَّاحِدٌ
दी हमने उन्हें	वो लोग जो	तुम शिर्क करते हो	उस से जो	बरी-उज़-ज़िम्मा हूं	और बेशक मैं	एक ही

وقف لازم باختلاف

خَسِرُوْٓا	اَلَّذِيْنَ	اَبْنَآءَهُمْ م	يَعْرِفُوْنَ	كَمَا	يَعْرِفُوْنَهٗ	الْكِتٰبَ
ख़सारे में डाला	वो जिन्होंने	अपने बेटों को	वो पहचानते हैं	जैसा कि	वो पहचानते हैं उसे	किताब

وقف لازم

افْتَرٰى	مِمَّنِ	اَظْلَمُ	وَمَنْ	لَا يُؤْمِنُوْنَ ⑳ ع	فَهُمْ	اَنْفُسَهُمْ
गढ़ ले	उससे जो	बड़ा ज़ालिम है	और कौन	नहीं वो ईमान लाते	तो वो	अपने नफ़्सों को

ع 2 10 8

لَا يُفْلِحُ	اِنَّهٗ	بِاٰيٰتِهٖ ؕ	كَذَّبَ	اَوْ	كَذِبًا	عَلَى اللّٰهِ
नहीं वो फ़लाह पाऐंगे	बेशक वो	उसकी आयात को	झुठलाए	या	झूठ	अल्लाह पर

لِلَّذِيْنَ	نَقُوْلُ	ثُمَّ	جَمِيْعًا	نَحْشُرُهُمْ	وَيَوْمَ	الظّٰلِمُوْنَ (21)
उनसे जिन्होंने	हम कहेंगे	फिर	सब के सब को	हम इकट्ठा करेंगे उनको	और जिस दिन	जो ज़ालिम हैं

ثُمَّ	تَزْعُمُوْنَ (22)	كُنْتُمْ	الَّذِيْنَ	شُرَكَآؤُكُمُ	اَيْنَ	اَشْرَكُوْٓا
फिर	तुम दावा करते	थे तुम	वो जो	शरीक तुम्हारे	कहां हैं	शिर्क किया

مَا	رَبِّنَا	اللّٰهِ	وَ	قَالُوْا	اَنْ	اِلَّآ	فِتْنَتُهُمْ	تَكُنْ	لَمْ
ना	जो रब है हमारा	अल्लाह की	क़सम है	वो कहेंगे	ये कि	मगर	उज़्र उनका	होगा	नहीं

وَضَلَّ	عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ	كَذَبُوْا	كَيْفَ	اُنْظُرْ	مُشْرِكِيْنَ (23)	كُنَّا
और गुम हो गए	अपने नफ़्सों पर	उन्होंने झूठ बोला	किस तरह	देखिए	शिर्क करने वाले	थे हम

اِلَيْكَ ۚ	يَّسْتَمِعُ	مَّنْ	وَمِنْهُمْ	يَفْتَرُوْنَ (24)	كَانُوْا	مَّا	عَنْهُمْ
तरफ़ आपके	कान लगाता है	जो	और उनमें से कोई है	वो गढ़ते	थे वो	जो	उनसे

وَقْرًا ؕ	وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ	يَّفْقَهُوْهُ	اَنْ	اَكِنَّةً	عَلٰى قُلُوْبِهِمْ	وَجَعَلْنَا
बोझ है	और उनके कानों में	(ना) वो समझ सकें उसे	कि	परदे	उनके दिलों पर	और डाल दिए हमने

جَآءُوْكَ	اِذَا	حَتّٰٓى	بِهَا ؕ	لَّا يُؤْمِنُوْا	اٰيَةٍ	كُلَّ	يَّرَوْا	وَاِنْ
वो आते हैं आपके पास	जब	यहां तक कि	उस पर	ना वो ईमान लाऐंगे	निशानी	हर	वो देख लें	और अगर

اَسَاطِيْرُ	اِلَّآ	هٰذَآ	اِنْ	كَفَرُوْٓا	الَّذِيْنَ	يَقُوْلُ	يُجَادِلُوْنَكَ
कहानियां	मगर	ये	नहीं	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	कहते हैं	वो झगड़ा करते हैं आपसे

يُّهْلِكُوْنَ	وَاِنْ	عَنْهُ	وَيَنْـَٔوْنَ	عَنْهُ	يَنْهَوْنَ	وَهُمْ	الْاَوَّلِيْنَ (25)
वो हलाक करते	और नहीं	उससे	और वो दूर रहते हैं	उससे	वो रोकते हैं	और वो	पहलों की

إِلَّآ	أَنفُسَهُمْ	وَمَا	يَشْعُرُونَ ﴿26﴾	وَلَوْ	تَرَىٰٓ	إِذْ	وُقِفُوا۟
मगर	अपने नफ़्सों को	और नहीं	वो शऊर रखते	और काश	आप देखें	जब	वो खड़े किए जाएंगे

عَلَى النَّارِ	فَقَالُوا۟	يَٰلَيْتَنَا	نُرَدُّ	وَلَا	نُكَذِّبَ	بِـَٔايَٰتِ	رَبِّنَا
ऊपर आग के	तो वो कहेंगे	ऐ काश हम	हम लौटाए जाएं	और ना	हम झुठलाएं	आयात को	अपने रब की

وَنَكُونَ	مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿27﴾	بَلْ	بَدَا	لَهُم	مَّا	كَانُوا۟	يُخْفُونَ
और हम हों	मोमिनों में से	बल्कि	ज़ाहिर हो गया	उनके लिए	जो	थे वो	वो छुपाते

مِن قَبْلُ ۖ	وَلَوْ	رُدُّوا۟	لَعَادُوا۟	لِمَا	نُهُوا۟	عَنْهُ	وَإِنَّهُمْ
इससे क़ब्ल	और अगर	वो लौटाए जाएं	अलबत्ता फिर करेंगे	उसी को जो	वो रोके गए थे	जिससे	और बेशक वो

لَكَٰذِبُونَ ﴿28﴾	وَقَالُوٓا۟	إِنْ	هِىَ	إِلَّا	حَيَاتُنَا	الدُّنْيَا	وَمَا
अलबत्ता झूठे हैं	और उन्होंने कहा	नहीं	ये	मगर	ज़िंदगी हमारी	दुनिया की	और नहीं

نَحْنُ	بِمَبْعُوثِينَ ﴿29﴾	وَلَوْ	تَرَىٰٓ	إِذْ	وُقِفُوا۟	عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ
हम	उठाए जाने वाले	और काश	आप देखें	जब	वो खड़े किए जाएंगे	अपने रब के सामने

قَالَ	أَلَيْسَ	هَٰذَا	بِالْحَقِّ ۚ	قَالُوا۟	بَلَىٰ	وَ	رَبِّنَا ۚ	قَالَ
वो फ़रमाएगा	क्या नहीं है	ये	हक़	वो कहेंगे	क्यों नहीं	क़सम है	हमारे रब की	वो फ़रमाएगा

ع 3 10 9

فَذُوقُوا۟	الْعَذَابَ	بِمَا	كُنتُمْ	تَكْفُرُونَ ﴿30﴾ ع	قَدْ	خَسِرَ
पस चखो	अज़ाब	बवजह उसके जो	थे तुम	तुम कुफ़्र करते	तहक़ीक़	ख़सारे में रहे

الَّذِينَ	كَذَّبُوا۟	بِلِقَآءِ	اللَّهِ ۖ	حَتَّىٰٓ	إِذَا	جَآءَتْهُمُ	السَّاعَةُ
वो जिन्होंने	झुठलाया	मुलाक़ात को	अल्लाह की	यहां तक कि	जब	आ जाएगी उनके पास	घड़ी (क़यामत की)

بَغْتَةً	قَالُوا۟	يَٰحَسْرَتَنَا	عَلَىٰ	مَا	فَرَّطْنَا	فِيهَا ۙ	وَهُمْ
अचानक	वो कहेंगे	हाय अफ़सोस हमारा	उस पर	जो	कमी-कोताही की हमने	उस के बारे में	और वो

يَحْمِلُوْنَ	أَوْزَارَهُمْ	عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ	أَلَا	سَآءَ	مَا	يَزِرُوْنَ ﴿31﴾
वो उठाऐंगे	बोझ अपने	अपनी पुश्तों पर	ख़बरदार	कितना बुरा है	जो	बोझ वो उठाऐंगे

وَمَا	الْحَيٰوةُ	الدُّنْيَآ	إِلَّا	لَعِبٌ	وَّلَهْوٌ ؕ	وَلَلدَّارُ	الْاٰخِرَةُ
और नहीं	ज़िंदगी	दुनिया की	मगर	खेल	और तमाशा	और अलबत्ता घर	आख़िरत का

خَيْرٌ	لِّلَّذِيْنَ	يَتَّقُوْنَ ؕ	أَفَلَا	تَعْقِلُوْنَ ﴿32﴾	قَدْ	نَعْلَمُ	إِنَّهٗ
बेहतर है	उनके लिए जो	तक़्वा करते हैं	क्या भला नहीं	तुम अक़्ल से काम लेते	तहक़ीक़	हम जानते हैं	कि बेशक वो

لَيَحْزُنُكَ	الَّذِيْ	يَقُوْلُوْنَ	فَإِنَّهُمْ	لَا يُكَذِّبُوْنَكَ	وَلٰكِنَّ
अलबत्ता ग़मगीन करता है आपको	जो	वो कहते हैं	पस बेशक वो	नहीं वो झुठलाते आपको	और लेकिन

الظّٰلِمِيْنَ	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ	يَجْحَدُوْنَ ﴿33﴾	وَلَقَدْ	كُذِّبَتْ	رُسُلٌ
ज़ालिम	अल्लाह की आयात का ही	वो इंकार करते हैं	और अलबत्ता तहक़ीक़	झुठलाए गए	कई रसूल

مِّنْ قَبْلِكَ	فَصَبَرُوْا	عَلٰى مَا	كُذِّبُوْا	وَأُوْذُوْا	حَتّٰٓى	أَتٰىهُمْ
आपसे पहले	पस उन्होंने सब्र किया	उस पर जो	वो झुठलाए गए	और वो सताए गए	यहां तक कि	आ गई उन के पास

نَصْرُنَا ج	وَلَا	مُبَدِّلَ	لِكَلِمٰتِ	اللّٰهِ ج	وَلَقَدْ	جَآءَكَ	مِنْ نَّبَإِى
मदद हमारी	और नहीं	कोई बदलने वाला	कलिमात को	अल्लाह के	और अलबत्ता तहक़ीक़	आ गई आप के पास	ख़बरें

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿34﴾	وَإِنْ	كَانَ	كَبُرَ	عَلَيْكَ	إِعْرَاضُهُمْ	فَإِنِ
रसूलों की	और अगर	है	भारी	आप पर	ऐराज़ करना उनका	फिर अगर

اسْتَطَعْتَ	أَنْ	تَبْتَغِيَ	نَفَقًا	فِي الْأَرْضِ	أَوْ	سُلَّمًا	فِي السَّمَآءِ
इस्तिताअत रखते हैं आप	कि	आप तलाश करें	एक सुरंग	ज़मीन में	या	एक सीढ़ी	आसमान में

فَتَأْتِيَهُمْ	بِاٰيَةٍ ؕ	وَلَوْ	شَآءَ	اللّٰهُ	لَجَمَعَهُمْ	عَلَى الْهُدٰى
तो आप ले आऐं उनके पास	कोई निशानी	और अगर	चाहता	अल्लाह	अलबत्ता वो जमा कर देता उन्हें	हिदायत पर

النصف
وقف غفران

وقف منزل
عند البعض على يسمعون

فَلَا	تَكُوْنَنَّ	مِنَ الْجٰهِلِيْنَ (35)	اِنَّمَا	يَسْتَجِيْبُ	الَّذِيْنَ	يَسْمَعُوْنَ ؕ
पस ना	हरगिज़ आप हों	नादानों में से	बेशक	क़ुबूल करते हैं	वो ही जो	सुनते हैं

وَالْمَوْتٰى	يَبْعَثُهُمُ	اللّٰهُ	ثُمَّ	اِلَيْهِ	يُرْجَعُوْنَ (36)	وَقَالُوْا	لَوْلَا
और मुर्दे	उठाएगा उन्हें	अल्लाह	फिर	उसी की तरफ़	वो लौटाए जाऐंगे	और वो कहते हैं	क्यों ना

نُزِّلَ	عَلَيْهِ	اٰيَةٌ	مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ	قُلْ	اِنَّ	اللّٰهَ	قَادِرٌ	عَلٰٓى	اَنْ
नाज़िल की गई	उस पर	कोई निशानी	उसके रब की तरफ़ से	कह दीजिए	बेशक	अल्लाह	क़ादिर है	उस पर	कि

يُّنَزِّلَ	اٰيَةً	وَّلٰكِنَّ	اَكْثَرَهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ (37)	وَمَا	مِنْ دَآبَّةٍ
वो नाज़िल करे	कोई निशानी	और लेकिन	अक्सर उनके	नहीं वो इल्म रखते	और नहीं	कोई जानदार

فِى الْاَرْضِ	وَلَا	طٰٓئِرٍ	يَّطِيْرُ	بِجَنَاحَيْهِ	اِلَّآ	اُمَمٌ	اَمْثَالُكُمْ ؕ
ज़मीन में	और ना	कोई परिंदा	जो उड़ता हो	साथ अपने दो परों के	मगर	गिरोह हैं	तुम्हारी ही तरह

مَا	فَرَّطْنَا	فِى الْكِتٰبِ	مِنْ شَىْءٍ	ثُمَّ	اِلٰى رَبِّهِمْ	يُحْشَرُوْنَ (38)
नहीं	कमी की हमने	किताब में	किसी चीज़ की	फिर	तरफ़ अपने रब के	वो इकट्ठे किए जाऐंगे

وَالَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا	صُمٌّ	وَّبُكْمٌ	فِى الظُّلُمٰتِ ؕ	مَنْ	يَّشَاِ
और वो जिन्होंने	झुठलाया	हमारी आयात को	बहरे	और गूंगे हैं	अंधेरों में हैं	जिसको	चाहता है

اللّٰهُ	يُضْلِلْهُ ؕ	وَمَنْ	يَّشَاْ	يَجْعَلْهُ	عَلٰى صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيْمٍ (39)	قُلْ
अल्लाह	भटका देता है उसे	और जिसको	वो चाहता है	वो कर देता है उसे	ऊपर रास्ते	सीधे के	कह दीजिए

اَرَءَيْتَكُمْ	اِنْ	اَتٰىكُمْ	عَذَابُ	اللّٰهِ	اَوْ	اَتَتْكُمُ	السَّاعَةُ
क्या ग़ौर किया तुमने	अगर	आ जाए तुम्हारे पास	अज़ाब	अल्लाह का	या	आ जाए तुम्हारे पास	घड़ी (क़यामत की)

اَغَيْرَ	اللّٰهِ	تَدْعُوْنَ ج	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ (40)	بَلْ	اِيَّاهُ
क्या ग़ैर	अल्लाह को	तुम पुकारोगे	अगर	हो तुम	सच्चे	बल्कि	सिर्फ़ उसी को

وَتَنْسَوْنَ	شَآءَ	اِنْ	اِلَيْهِ	تَدْعُوْنَ	مَا	فَيَكْشِفُ	تَدْعُوْنَ
और तुम भूल जाओगे	वो चाहे	अगर	तरफ़ उस के	तुम पुकारोगे	उसे जो	फिर वो खोल देगा	तुम पुकारोगे

ع 4 11 10

فَاَخَذْنٰهُمْ	مِّنْ قَبْلِكَ	اِلٰٓى اُمَمٍ	اَرْسَلْنَآ	وَلَقَدْ	تُشْرِكُوْنَ ع (41)	مَا
पस पकड़ लिया हमने उन्हें	आपसे क़ब्ल	तरफ़ उम्मतों के	भेजा हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़	तुम शरीक ठहराते हो	जिन्हें

جَآءَهُمْ	اِذْ	فَلَوْلَآ	يَتَضَرَّعُوْنَ (42)	لَعَلَّهُمْ	وَالضَّرَّآءِ	بِالْبَاْسَآءِ
आया उनके पास	जब	फिर क्यों ना	वो आजिज़ी करें	शायद कि वो	और तकलीफ़ के	साथ तंगी

لَهُمُ	وَزَيَّنَ	قُلُوْبُهُمْ	قَسَتْ	وَلٰكِنْ	تَضَرَّعُوْا	بَاْسُنَا
उनके लिए	और मुज़य्यन कर दिया	दिल उनके	सख़्त हो गए	और लेकिन	उन्होंने आजिज़ी की	अज़ाब हमारा

ذُكِّرُوْا	مَا	نَسُوْا	فَلَمَّا	يَعْمَلُوْنَ (43)	كَانُوْا	مَا	الشَّيْطٰنُ
वो नसीहत किए गए थे	जो कुछ	वो भूल गए	फिर जब	वो अमल करते	थे वो	जो	शैतान ने

اِذَا	حَتّٰٓى	شَيْءٍ ط	كُلِّ	اَبْوَابَ	عَلَيْهِمْ	فَتَحْنَا	بِهٖ
जब	यहां तक कि	चीज़ के	हर	दरवाज़े	उन पर	खोल दिए हमने	जिसकी

مُّبْلِسُوْنَ (44)	هُمْ	فَاِذَا	بَغْتَةً	اَخَذْنٰهُمْ	اُوْتُوْٓا	بِمَآ	فَرِحُوْا
मायूस होने वाले थे	वो	तो उस वक़्त	अचानक	पकड़ लिया हमने उन्हें	वो दिए गए थे	उस पर जो	वो खुश हो गए

رَبِّ	لِلّٰهِ	وَالْحَمْدُ	ظَلَمُوْا ط	الَّذِيْنَ	الْقَوْمِ	دَابِرُ	فَقُطِعَ
जो रब है	अल्लाह के लिए है	और सब तारीफ़	ज़ुल्म किया	जिन्होंने	उस क़ौम की	जड़	पस काट दी गई

وَاَبْصَارَكُمْ	سَمْعَكُمْ	اللّٰهُ	اَخَذَ	اِنْ	اَرَءَيْتُمْ	قُلْ	الْعٰلَمِيْنَ (45)
और आंखें तुम्हारी	कान तुम्हारे	अल्लाह	ले जाए	अगर	क्या ग़ौर किया तुमने	कह दीजिए	तमाम जहानों का

بِهٖ ط	يَاْتِيْكُمْ	اللّٰهِ	غَيْرُ	اِلٰهٌ	مَّنْ	عَلٰى قُلُوْبِكُمْ	وَخَتَمَ
उसे	जो लाए तुम्हारे पास	अल्लाह के	सिवाए	इलाह	कौन है	तुम्हारे दिलों पर	और वो मोहर लगा दे

قُلْ	يَصْدِفُوْنَ (46)	هُمْ	ثُمَّ	الْاٰيٰتِ	نُصَرِّفُ	كَيْفَ	اُنْظُرْ
कह दीजिए	वो ऐराज़ करते हैं	वो	फिर	आयात को	हम फेर-फेर कर लाते हैं	किस तरह	देखो

هَلْ	جَهْرَةً	اَوْ	بَغْتَةً	اللّٰهِ	عَذَابُ	اَتٰىكُمْ	اِنْ	اَرَءَيْتَكُمْ
नहीं	एलानिया	या	अचानक	अल्लाह का	अज़ाब	आए तुम्हारे पास	अगर	क्या ग़ौर किया तुमने

الْمُرْسَلِيْنَ	نُرْسِلُ	وَمَا	الظّٰلِمُوْنَ (47)	الْقَوْمُ	اِلَّا	يُهْلَكُ
रसूलों को	हम भेजते	और नहीं	जो ज़ालिम हैं	वो लोग	मगर	हलाक किए जाऐंगे

فَلَا	وَاَصْلَحَ	اٰمَنَ	فَمَنْ	وَمُنْذِرِيْنَ ج	مُبَشِّرِيْنَ	اِلَّا
तो ना	और उसने इस्लाह कर ली	ईमान लाया	पस जो कोई	और डराने वाले (बना कर)	ख़ुशख़बरी देने वाले	मगर

بِاٰيٰتِنَا	كَذَّبُوْا	وَالَّذِيْنَ	يَحْزَنُوْنَ (48)	هُمْ	وَلَا	عَلَيْهِمْ	خَوْفٌ
हमारी आयात को	झुठलाया	और वो जिन्होंने	वो ग़मगीन होंगे	वो	और ना	उन पर	कोई ख़ौफ़ होगा

لَآ اَقُوْلُ	قُلْ	يَفْسُقُوْنَ (49)	كَانُوْا	بِمَا	الْعَذَابُ	يَمَسُّهُمُ
नहीं मैं कहता	कह दीजिए	वो नाफ़रमानी करते	थे वो	बवजह उसके जो	अज़ाब	छुऐगा उन्हें

اَقُوْلُ	وَلَآ	الْغَيْبَ	اَعْلَمُ	وَلَآ	اللّٰهِ	خَزَآئِنُ	عِنْدِيْ	لَكُمْ
मैं कहता	और नहीं	ग़ैब को	मैं जानता	और नहीं	अल्लाह के	ख़ज़ाने हैं	मेरे पास	तुमसे

قُلْ	اِلَيَّ ط	يُوْحٰۤى	مَا	اِلَّا	اَتَّبِعُ	اِنْ	مَلَكٌ ج	اِنِّيْ	لَكُمْ
कह दीजिए	तरफ़ मेरे	वही की जाती है	उसकी जो	मगर	मैं पैरवी करता	नहीं	फ़रिश्ता हूं	बेशक मैं	तुमसे

وَاَنْذِرْ	تَتَفَكَّرُوْنَ (50) ع	اَفَلَا	وَالْبَصِيْرُ ط	الْاَعْمٰى	يَسْتَوِي	هَلْ	ع 5 9 11
और डराइए	तुम ग़ौरो-फ़िक्र करते	क्या फिर नहीं	और देखने वाला	अँधा	बराबर हो सकता है	क्या	

لَهُمْ	لَيْسَ	اِلٰى رَبِّهِمْ	يُّحْشَرُوْۤا	اَنْ	يَخَافُوْنَ	الَّذِيْنَ	بِهِ
उनके लिए	नहीं (होगा)	तरफ़ अपने रब के	वो इकट्ठे किए जाऐंगे	कि	ख़ौफ़ खाते हैं	उनको जो	साथ उसके

مِّنْ دُوْنِهٖ	وَلِيٌّ	وَّلَا	شَفِيْعٌ	لَّعَلَّهُمْ	يَتَّقُوْنَ (51)	وَلَا	تَطْرُدِ
उसके सिवा	कोई दोस्त	और ना	कोई सिफ़ारिशी	ताकि वो	वो बच जाएँ	और ना	आप दूर कीजिए

الَّذِيْنَ	يَدْعُوْنَ	رَبَّهُمْ	بِالْغَدٰوةِ	وَالْعَشِيِّ	يُرِيْدُوْنَ	وَجْهَهٗ ؕ
उनको जो	पुकारते हैं	अपने रब को	सुबह	और शाम	वो चाहते हैं	चेहरा उसका

مَا	عَلَيْكَ	مِنْ حِسَابِهِمْ	مِّنْ شَيْءٍ	وَّمَا	مِنْ حِسَابِكَ	عَلَيْهِمْ
नहीं	आप पर	उनके हिसाब में से	कोई चीज़	और नहीं	आपके हिसाब में से	उन पर

مِّنْ شَيْءٍ	فَتَطْرُدَهُمْ	فَتَكُوْنَ	مِنَ الظّٰلِمِيْنَ (52)	وَكَذٰلِكَ
कोई चीज़	फिर (अगर) आप दूर करेंगे उन्हें	तो आप हो जाएँगे	ज़ालिमों में से	और इसी तरह

فَتَنَّا	بَعْضَهُمْ	بِبَعْضٍ	لِّيَقُوْلُوْٓا	اَهٰٓؤُلَآءِ	مَنَّ	اللّٰهُ	عَلَيْهِمْ
आज़माया हमने	उनके बाज़ को	साथ बाज़ के	ताकि वो कहें	क्या ये हैं वो लोग	एहसान किया	अल्लाह ने	जिन पर

مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ	اَلَيْسَ	اللّٰهُ	بِاَعْلَمَ	بِالشّٰكِرِيْنَ (53)	وَاِذَا	جَآءَكَ
हमारे दर्मियान में से	क्या नहीं है	अल्लाह	ख़ूब जानने वाला	शुक्र करने वालों को	और जब	आएँ आपके पास

الَّذِيْنَ	يُؤْمِنُوْنَ	بِاٰيٰتِنَا	فَقُلْ	سَلٰمٌ	عَلَيْكُمْ	كَتَبَ	رَبُّكُمْ
वो जो	ईमान लाते हैं	हमारी आयात पर	पस कह दीजिए	सलाम हो	तुम पर	लिख दी	तुम्हारे रब ने

عَلٰى نَفْسِهِ	الرَّحْمَةَ ۙ	اَنَّهٗ	مَنْ	عَمِلَ	مِنْكُمْ	سُوْٓءًۢا	بِجَهَالَةٍ
अपने नफ़्स पर	रहमत	कि बेशक वो	जो	अमल करे	तुम में से	बुरे	बवजह जहालत के

ثُمَّ	تَابَ	مِنْۢ بَعْدِهٖ	وَاَصْلَحَ	فَاَنَّهٗ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ (54)
फिर	वो तौबा कर ले	बाद उसके	और वो इस्लाह कर ले	तो बेशक वो	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है

وَكَذٰلِكَ	نُفَصِّلُ	الْاٰيٰتِ	وَلِتَسْتَبِيْنَ	سَبِيْلُ	الْمُجْرِمِيْنَ (55) ع
और इसी तरह	हम खोल-खोल कर बयान करते हैं	आयात को	और ताकि वाज़ेह हो जाए	रास्ता	मुजरिमों का

ع 6 5 12

قُلْ	اِنِّيْ	نُهِيْتُ	اَنْ	اَعْبُدَ	الَّذِيْنَ	تَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِ
कह दीजिए	बेशक मैं	रोका गया हूं मैं	कि	मैं इबादत करूं	उनकी जिन्हें	तुम पुकारते हो	सिवाए

اللّٰهِ ؕ	قُلْ	لَّآ اَتَّبِعُ	اَهْوَآءَكُمْ ۙ	قَدْ	ضَلَلْتُ	اِذًا	وَّمَآ
अल्लाह के	कह दीजिए	नहीं मैं पैरवी करूंगा	तुम्हारी ख़्वाहिशात की	तहक़ीक़	मैं भटक गया	तब	और नहीं (हूंगा)

اَنَا	مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ (56)	قُلْ	اِنِّيْ	عَلٰى بَيِّنَةٍ	مِّنْ رَّبِّيْ
मैं	हिदायत पाने वालों में से	कह दीजिए	बेशक मैं	एक वाज़ेह दलील पर हूं	अपने रब की तरफ़ से

وَكَذَّبْتُمْ	بِهٖ ؕ	مَا	عِنْدِيْ	مَا	تَسْتَعْجِلُوْنَ	بِهٖ ؕ	اِنِ
और झुठला दिया तुमने	उसे	नहीं	मेरे पास	वो जो	तुम जल्द तलब कर रहे हो	उसको	नहीं

الْحُكْمُ	اِلَّا	لِلّٰهِ ؕ	يَقُصُّ	الْحَقَّ	وَهُوَ	خَيْرُ	الْفٰصِلِيْنَ (57)
हुक्म	मगर	अल्लाह ही का	वो बयान करता है	हक़ को	और वो	बेहतर है	सब फ़ैसला करने वालों से

قُلْ	لَّوْ	اَنَّ	عِنْدِيْ	مَا	تَسْتَعْجِلُوْنَ	بِهٖ	لَقُضِيَ
कह दीजिए	अगर	बेशक	मेरे पास (होता)	वो जो	तुम जल्द तलब कर रहे हो	उसे	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता

الْاَمْرُ	بَيْنِيْ	وَبَيْنَكُمْ ؕ	وَاللّٰهُ	اَعْلَمُ	بِالظّٰلِمِيْنَ (58)	وَعِنْدَهٗ
मामले का	दर्मियान मेरे	और दर्मियान तुम्हारे	और अल्लाह	ख़ूब जानता है	ज़लिमों को	और उसी के पास हैं

مَفَاتِحُ	الْغَيْبِ	لَا يَعْلَمُهَآ	اِلَّا	هُوَ ؕ	وَيَعْلَمُ	مَا	فِي الْبَرِّ
चाबियां	ग़ैब की	नहीं जानता उन्हें	मगर	वो ही	और वो जानता है	जो	ख़ुश्की में है

وَالْبَحْرِ ؕ	وَمَا	تَسْقُطُ	مِنْ وَّرَقَةٍ	اِلَّا	يَعْلَمُهَا	وَلَا	حَبَّةٍ
और समुन्दर में	और नहीं	गिरता	कोई पत्ता	मगर	वो जानता है उसे	और ना	कोई दाना

فِيْ ظُلُمٰتِ	الْاَرْضِ	وَلَا	رَطْبٍ	وَّلَا	يَابِسٍ	اِلَّا	فِيْ كِتٰبٍ
अंधेरों में	ज़मीन के	और ना	कोई तर	और ना	कोई ख़ुश्क	मगर	एक किताब में है

مُّبِيْنٍ (59)	وَهُوَ	الَّذِيْ	يَتَوَفّٰىكُمْ	بِالَّيْلِ	وَيَعْلَمُ	مَا	جَرَحْتُمْ
वाज़ेह	और वो ही है	जो	फ़ौत करता है तुम्हें	रात को	और वो जानता है	जो	कमाई करते हो तुम

بِالنَّهَارِ	ثُمَّ	يَبْعَثُكُمْ	فِيْهِ	لِيُقْضٰٓى	اَجَلٌ	مُّسَمًّى ج	ثُمَّ
दिन को	फिर	वो उठाता है तुम्हें	उसमें	ताकि पूरा किया जाए	वक़्त	मुक़र्रर	फिर

ع 7 5 13

اِلَيْهِ	مَرْجِعُكُمْ	ثُمَّ	يُنَبِّئُكُمْ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ (60) ع	وَهُوَ
उसी की तरफ़	लौटना है तुम्हारा	फिर	वो बताएगा तुम्हें	जो	थे तुम	तुम अमल करते	और वो

الْقَاهِرُ	فَوْقَ	عِبَادِهٖ	وَيُرْسِلُ	عَلَيْكُمْ	حَفَظَةً ط	حَتّٰٓى	اِذَا
ग़ालिब है	ऊपर	अपने बंदों के	और वो भेजता है	तुम पर	निगहबान	यहां तक कि	जब

جَآءَ	اَحَدَكُمُ	الْمَوْتُ	تَوَفَّتْهُ	رُسُلُنَا	وَهُمْ	لَا يُفَرِّطُوْنَ (61)
आती है	तुम में से किसी एक को	मौत	फ़ौत करते हैं उसे	हमारे भेजे हुए	और वो	नहीं वो कमी-कोताही करते

ثُمَّ	رُدُّوْٓا	اِلَى اللّٰهِ	مَوْلٰىهُمُ	الْحَقِّ ط	اَلَا	لَهُ	الْحُكْمُ قف
फिर	वो लौटाए जाते हैं	तरफ़ अल्लाह के	जो मौला है उनका	हक़ीक़ी	ख़बरदार	उसी के लिए है	फ़ैसला

وَهُوَ	اَسْرَعُ	الْحٰسِبِيْنَ (62)	قُلْ	مَنْ	يُّنَجِّيْكُمْ	مِّنْ ظُلُمٰتِ
और वो	ज़्यादा जल्द है (हिसाब में)	सब हिसाब लेने वालों से	कह दीजिए	कौन	निजात देता है तुम्हें	अंधेरों से

الْبَرِّ	وَالْبَحْرِ	تَدْعُوْنَهٗ	تَضَرُّعًا	وَّخُفْيَةً ج	لَئِنْ	اَنْجٰىنَا
ख़ुश्की	और समुन्दर के	तुम पुकारते हो उसे	गिड़गिड़ा कर	और चुपके-चुपके	अलबत्ता अगर	उसने निजात दी हमें

مِنْ هٰذِهٖ	لَنَكُوْنَنَّ	مِنَ الشّٰكِرِيْنَ (63)	قُلِ	اللّٰهُ	يُنَجِّيْكُمْ
इससे	अलबत्ता हम ज़रूर हो जाएंगे	शुक्र करने वालों में से	कह दीजिए	अल्लाह	वो निजात देता है तुम्हें

مِّنْهَا	وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ	ثُمَّ	اَنْتُمْ	تُشْرِكُوْنَ (64)	قُلْ	هُوَ
इससे	और हर मुसीबत से	फिर	तुम	तुम शरीक बनाते हो	कह दीजिए	वो

الْقَادِرُ	عَلٰٓى	اَنْ	يَّبْعَثَ	عَلَيْكُمْ	عَذَابًا	مِّنْ فَوْقِكُمْ	اَوْ
क़ादिर है	इस पर	कि	वो भेजे	तुम पर	अज़ाब	तुम्हारे ऊपर से	या

مِنْ تَحْتِ	اَرْجُلِكُمْ	اَوْ	يَلْبِسَكُمْ	شِيَعًا	وَّيُذِيْقَ	بَعْضَكُمْ
नीचे से	तुम्हारे पांव के	या	वो लड़ा दे तुम्हें	गिरोहों में	और वो चखा दे	तुम्हारे बाज़ को

بَاْسَ	بَعْضٍ ط	اُنْظُرْ	كَيْفَ	نُصَرِّفُ	الْاٰيٰتِ	لَعَلَّهُمْ
क़ुव्वत	बाज़ की	देखो	किस तरह	हम फेर-फेर कर बयान करते हैं	आयात	ताकि वो

يَفْقَهُوْنَ ﴿65﴾	وَكَذَّبَ	بِهٖ	قَوْمُكَ	وَهُوَ	الْحَقُّ ط	قُلْ	لَّسْتُ
वो समझें	और झुठला दिया	उसे	आपकी क़ौम ने	हालांकि वो	हक़ है	कह दीजिए	नहीं हूं मैं

عَلَيْكُمْ	بِوَكِيْلٍ ﴿66﴾ ط	لِكُلِّ	نَبَاٍ	مُّسْتَقَرٌّ ز	وَّسَوْفَ	تَعْلَمُوْنَ ﴿67﴾
तुम पर	कोई ज़िम्मेदार	वास्ते हर	ख़बर के	एक वक़्त मुक़र्रर है	और अनक़रीब	तुम जान लोगे

وَاِذَا	رَاَيْتَ	الَّذِيْنَ	يَخُوْضُوْنَ	فِيْٓ اٰيٰتِنَا	فَاَعْرِضْ	عَنْهُمْ
और जब	देखें आप	उन लोगों को	जो मशग़ूल होते हैं	हमारी आयात में	तो ऐराज़ कीजिए	उनसे

حَتّٰى	يَخُوْضُوْا	فِيْ حَدِيْثٍ	غَيْرِهٖ ط	وَاِمَّا	يُنْسِيَنَّكَ	الشَّيْطٰنُ
यहां तक कि	वो मशग़ूल हो जाएं	किसी बात में	सिवाए उसके	और अगर	भुला दे आपको	शैतान

فَلَا	تَقْعُدْ	بَعْدَ	الذِّكْرٰى	مَعَ الْقَوْمِ	الظّٰلِمِيْنَ ﴿68﴾	وَمَا
तो ना	आप बैठिए	बाद	याद आने के	साथ उन लोगों के	जो ज़ालिम हैं	और नहीं

عَلَى الَّذِيْنَ	يَتَّقُوْنَ	مِنْ حِسَابِهِمْ	مِّنْ شَيْءٍ	وَّلٰكِنْ	ذِكْرٰى
उनके ज़िम्मे	जो तक़्वा करते हैं	उनके हिसाब में से	कोई चीज़	और लेकिन	याद दिहानी है

لَعَلَّهُمْ	يَتَّقُوْنَ ﴿69﴾	وَذَرِ	الَّذِيْنَ	اتَّخَذُوْا	دِيْنَهُمْ	لَعِبًا
ताकि वो	वो तक़्वा करें	और छोड़ दीजिए	उनको जिन्होंने	बना लिया है	अपने दीन को	खेल

وَّلَهْوًا	وَّغَرَّتْهُمُ	الْحَيٰوةُ	الدُّنْيَا	وَذَكِّرْ	بِهٖٓ	اَنْ
और तमाशा	और धोखे में डाल दिया उन्हें	ज़िंदगी ने	दुनिया की	और नसीहत कीजिए	साथ उसके	कि

تُبْسَلَ	نَفْسٌۢ	بِمَا	كَسَبَتْ ۖ ق	لَيْسَ	لَهَا	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ
(ना) हलाक किया जाए	कोई नफ़्स	बवजह उसके जो	उसने कमाई की	नहीं है	उसके लिए	सिवाए	अल्लाह के

وَلِيٌّ	وَّلَا	شَفِيْعٌ ۚ	وَاِنْ	تَعْدِلْ	كُلَّ	عَدْلٍ	لَّا يُؤْخَذْ
कोई दोस्त	और ना	कोई सिफ़ारशी	और अगर	वो बदला दे	हर तरह का	बदला	ना लिया जाएगा

مِنْهَا ۗ	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	اُبْسِلُوْا	بِمَا	كَسَبُوْا ۚ	لَهُمْ	شَرَابٌ
उससे	यही लोग हैं	वो जो	हलाक कर दिए गए	बवजह उसके जो	उन्होंने कमाया	उनके लिए है	पीना

ع 8 10 14

مِّنْ حَمِيْمٍ	وَّعَذَابٌ	اَلِيْمٌۢ	بِمَا	كَانُوْا	يَكْفُرُوْنَ ﴿70﴾ ع	قُلْ
खौलते हुए पानी से	और अज़ाब	दर्दनाक	बवजह उसके जो	थे वो	वो कुफ़्र करते	कह दीजिए

اَنَدْعُوْا	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	مَا	لَا يَنْفَعُنَا	وَلَا	يَضُرُّنَا
क्या हम पुकारें	सिवाए	अल्लाह के	उसको जो	नहीं वो नफ़ा दे सकता हमें	और ना ही	वो नुक़सान दे सकता है हमें

وَنُرَدُّ	عَلٰٓى اَعْقَابِنَا	بَعْدَ	اِذْ	هَدٰىنَا	اللّٰهُ	كَالَّذِى
और हम फेर दिए जाएंगे	अपनी एड़ियों पर	बाद उसके	जब	हिदायत दी हमें	अल्लाह ने	उस शख़्स की तरह

اسْتَهْوَتْهُ	الشَّيٰطِيْنُ	فِى الْاَرْضِ	حَيْرَانَ ۠	لَهٗٓ	اَصْحٰبٌ	يَّدْعُوْنَهٗٓ
बहका दिया उसे	शैतानों ने	ज़मीन में	हैरान करके	उसके	कुछ साथी हैं	वो पुकारते हैं उसे

اِلَى	الْهُدَى	ائْتِنَا ۗ	قُلْ	اِنَّ	هُدَى	اللّٰهِ	هُوَ	الْهُدٰى ۗ
तरफ़	हिदायत के	आ जाओ हमारे पास	कह दीजिए	बेशक	हिदायत	अल्लाह की	वही	(असल) हिदायत है

وَاُمِرْنَا	لِنُسْلِمَ	لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿71﴾ ۙ	وَاَنْ	اَقِيْمُوا	الصَّلٰوةَ
और हुक्म दिए गए हम	ताकि हम फ़रमाबरदार हो जाएं	रब्बुल आलमीन के लिए	और ये कि	क़ायम करो	नमाज़

الَّذِي	وَهُوَ	تُحْشَرُونَ (72)	إِلَيْهِ	الَّذِيٓ	وَهُوَ	وَاتَّقُوهُ ط
जिसने	और वही है	तुम इकट्ठे किए जाओगे	जिसकी तरफ़	वही है	और वो	और डरो उससे

فَيَكُونُ ۚ	كُنْ	يَقُولُ	وَيَوْمَ	بِالْحَقِّ ط	وَالْأَرْضَ	السَّمٰوٰتِ	خَلَقَ
तो वो हो जाएगा	हो जा	वो कहेगा	और जिस दिन	साथ हक़ के	और ज़मीन को	आसमानों को	पैदा किया

فِي الصُّورِ ط	يُنْفَخُ	يَوْمَ	الْمُلْكُ	وَلَهُ	الْحَقُّ ط	قَوْلُهُ
सूर में	फूंका जाएगा	जिस दिन	बादशाहत	और उसी के लिए है	सच्चा है	उसकी बात ही

وَإِذْ	الْخَبِيرُ (73)	الْحَكِيمُ	وَهُوَ	وَالشَّهَادَةِ ط	الْغَيْبِ	عٰلِمُ
और जब	ख़ूब ख़बर रखने वाला है	बहुत हिक्मत वाला है	और वो	और हाज़िर का	ग़ैब का	जानने वाला है

إِنِّيٓ	اٰلِهَةً ج	أَصْنَامًا	أَتَتَّخِذُ	اٰزَرَ	لِأَبِيهِ	إِبْرٰهِيمُ	قَالَ
बेशक मैं	इलाह	बुतों को	क्या तू बनाता है	आज़र को	अपने बाप	इब्राहीम ने	कहा

إِبْرٰهِيمَ	نُرِيٓ	وَكَذٰلِكَ	مُبِينٍ (74)	فِي ضَلٰلٍ	وَقَوْمَكَ	أَرٰىكَ
इब्राहीम को	हम दिखाते थे	और इसी तरह	खुली	गुमराही में	और तेरी क़ौम को	मैं देखता हूं तुझे

فَلَمَّا	مِنَ الْمُوقِنِينَ (75)	وَلِيَكُونَ	وَالْأَرْضِ	السَّمٰوٰتِ	مَلَكُوتَ
फिर जब	यक़ीन करने वालों में से	और ताकि वो हो जाए	और ज़मीन की	आसमानों	बादशाहत

فَلَمَّآ	رَبِّي ج	هٰذَا	قَالَ	كَوْكَبًا ج	رَاٰ	الَّيْلُ	عَلَيْهِ	جَنَّ
फिर जब	मेरा रब है	ये	उसने कहा	एक सितारा	उसने देखा	रात	उस पर	छा गई

بَازِغًا	الْقَمَرَ	رَاٰ	فَلَمَّا	الْاٰفِلِينَ (76)	لَآ أُحِبُّ	قَالَ	أَفَلَ
चमकता हुआ	चांद को	उसने देखा	फिर जब	छुपने वालो को	नहीं मैं पसंद करता	कहा	वो छुप गया

يَهْدِنِي	لَمْ	لَئِنْ	قَالَ	أَفَلَ	فَلَمَّآ	رَبِّي ج	هٰذَا	قَالَ
हिदायत दी मुझे	ना	अलबत्ता अगर	उसने कहा	वो छुप गया	फिर जब	मेरा रब है	ये	उसने कहा

الثلثة

رَبِّيْ	لَاَكُوْنَنَّ	مِنَ الْقَوْمِ	الضَّآلِّيْنَ (77)	فَلَمَّا	رَاَ
मेरे रब ने	अलबत्ता मैं ज़रूर हो जाऊंगा	उन लोगों मे से	जो गुमराह हैं	फिर जब	उसने देखा

الشَّمْسَ	بَازِغَةً	قَالَ	هٰذَا	رَبِّيْ	هٰذَآ	اَكْبَرُ ج	فَلَمَّآ	اَفَلَتْ
सूरज को	चमकता हुआ	उसने कहा	ये	मेरा रब है	ये	सबसे बड़ा है	फिर जब	वो छुप गया

قَالَ	يٰقَوْمِ	اِنِّيْ	بَرِيْٓءٌ	مِّمَّا	تُشْرِكُوْنَ (78)	اِنِّيْ
उसने कहा	ऐ मेरी क़ौम	बेशक मैं	बरी-उज़- ज़िम्मा हूं	उससे जो	तुम शरीक ठहराते हो	बेशक मैं

وَجَّهْتُ	وَجْهِيَ	لِلَّذِيْ	فَطَرَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	حَنِيْفًا
रुख़ कर लिया मैं ने	अपने चेहरे का	उसके लिए जिसने	पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	यकसू होकर

وَّمَآ	اَنَا	مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ج (79)	وَحَآجَّهٗ	قَوْمُهٗ ط	قَالَ	اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ
और नहीं	मैं	मुशरिकीन में से	और झगड़ा किया उससे	उसकी क़ौम ने	उसने कहा	क्या तुम झगड़ते हो मुझसे

فِي اللّٰهِ	وَقَدْ	هَدٰىنِ ط	وَلَآ	اَخَافُ	مَا	تُشْرِكُوْنَ
अल्लाह के बारे में	हालांकि तहक़ीक़	उसने हिदायत दी मुझे	और नहीं	मैं डरता (उनसे)	जिनको	तुम शरीक ठहराते हो

بِهٖٓ	اِلَّآ	اَنْ	يَّشَآءَ	رَبِّيْ	شَيْئًا ط	وَسِعَ	رَبِّيْ	كُلَّ
साथ उसके	मगर	ये कि	चाहे	रब मेरा	कोई चीज़	अहाता कर रखा है	मेरे रब ने	हर

شَيْءٍ	عِلْمًا ط	اَفَلَا	تَتَذَكَّرُوْنَ (80)	وَكَيْفَ	اَخَافُ	مَآ
चीज़ का	इल्म के ऐतबार से	क्या भला नहीं	तुम नसीहत पकड़ते	और क्यों कर	मैं डरूं	उससे जिसको

اَشْرَكْتُمْ	وَلَا	تَخَافُوْنَ	اَنَّكُمْ	اَشْرَكْتُمْ	بِاللّٰهِ	مَا	لَمْ
शरीक बनाया तुमने	जबकि नहीं	तुम डरते	कि बेशक तुम	शरीक बनाया तुमने	अल्लाह का	उसे जो	नहीं

يُنَزِّلْ	بِهٖ	عَلَيْكُمْ	سُلْطٰنًا ط	فَاَيُّ	الْفَرِيْقَيْنِ	اَحَقُّ
उसने नाज़िल की	जिसकी	तुम पर	कोई दलील	तो कौन सा	दोनों गिरोहों में से	ज़्यादा हक़दार है

وقف لازم

بِالْاَمْنِ ج	اِنْ	كُنْتُمْ	تَعْلَمُوْنَ (81)	اَلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَلَمْ	يَلْبِسُوْٓا
अमन का	अगर	हो तुम	तुम जानते	वो जो	ईमान लाए	और नहीं	उन्होंने मिलाया

ع 9 12 15

اِيْمَانَهُمْ	بِظُلْمٍ	اُولٰٓئِكَ	لَهُمُ	الْاَمْنُ	وَهُمْ	مُّهْتَدُوْنَ (82) ع
अपने ईमान को	साथ ज़ुल्म के	यही लोग हैं	उनके लिए	अमन है	और वही	हिदायत याफ़्ता हैं

وَتِلْكَ	حُجَّتُنَآ	اٰتَيْنٰهَآ	اِبْرٰهِيْمَ	عَلٰى قَوْمِهٖ ط	نَرْفَعُ	دَرَجٰتٍ
और ये है	हुज्जत हमारी	दिया था हमने इसे	इब्राहीम को	उसकी क़ौम के ख़िलाफ़	हम बुलंद करते हैं	दरजात

مَّنْ	نَّشَآءُ ط	اِنَّ	رَبَّكَ	حَكِيْمٌ	عَلِيْمٌ (83)	وَوَهَبْنَا	لَهٗٓ	اِسْحٰقَ
जिसके	हम चाहते हैं	बेशक	रब आपका	बहुत हिक्मत वाला है	बहुत इल्म वाला है	और अता किए हमने	उसे	इस्हाक़

وَيَعْقُوْبَ ط	كُلًّا	هَدَيْنَا ج	وَنُوْحًا	هَدَيْنَا	مِنْ قَبْلُ	وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ
और याक़ूब	हर एक को	हिदायत दी हमने	और नूह को	हिदायत दी हमने	इससे क़ब्ल	और उसकी औलाद में से

دَاوٗدَ	وَسُلَيْمٰنَ	وَاَيُّوْبَ	وَيُوْسُفَ	وَمُوْسٰى	وَهٰرُوْنَ ط	وَكَذٰلِكَ
दाऊद	और सुलैमान	और अय्यूब	और यूसुफ़	और मूसा	और हारून को	और इसी तरह

نَجْزِى	الْمُحْسِنِيْنَ (84) لا	وَزَكَرِيَّا	وَيَحْيٰى	وَعِيْسٰى	وَاِلْيَاسَ ط	كُلٌّ
हम बदला देते हैं	एहसान करने वालों को	और ज़करिया	और यहया	और ईसा	और इलियास	सब के सब

مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ (85) لا	وَاِسْمٰعِيْلَ	وَالْيَسَعَ	وَيُوْنُسَ	وَلُوْطًا ط	وَكُلًّا
नेक लोगों में से थे	और इस्माईल	और अलयसअ	और यूनुस	और लूत	और हर एक को

فَضَّلْنَا	عَلَى الْعٰلَمِيْنَ (86) لا	وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ	وَذُرِّيّٰتِهِمْ	وَاِخْوَانِهِمْ ج
फ़ज़ीलत दी हमने	तमाम जहान वालों पर	और उनके आबा ओ अजदाद में से	और उनकी औलाद में से	और उनके भाईयों में से

وَاجْتَبَيْنٰهُمْ	وَهَدَيْنٰهُمْ	اِلٰى صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيْمٍ (87)	ذٰلِكَ	هُدَى
और चुन लिया हमने उन्हें	और हिदायत दी हमने उन्हें	तरफ़ रास्ते	सीधे के	ये	हिदायत है

اللّٰهِ	يَهْدِىْ	بِهٖ	مَنْ	يَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖ ؕ	وَلَوْ	اَشْرَكُوْا
अल्लाह की	वो हिदायत देता है	साथ उसके	जिसे	वो चाहता है	अपने बंदों में से	और अगर	वो शिर्क करते

لَحَبِطَ	عَنْهُمْ	مَّا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ (88)	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	اٰتَيْنٰهُمُ
अलबत्ता ज़ाया हो जाते	उनसे	जो	थे वो	वो अमल करते	यही लोग हैं	वो जो	दी हमने उन्हें

الْكِتٰبَ	وَالْحُكْمَ	وَالنُّبُوَّةَ ۚ	فَاِنْ	يَّكْفُرْ	بِهَا	هٰٓؤُلَآءِ	فَقَدْ
किताब	और हिक्मत	और नुबुव्वत	फिर अगर	कुफ़्र करते हैं	उसका	ये लोग	तो तहक़ीक़

وَكَّلْنَا	بِهَا	قَوْمًا	لَّيْسُوْا	بِهَا	بِكٰفِرِيْنَ (89)	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ
मुक़र्रर कर दिया हमने	साथ उसके	एक क़ौम को	नहीं हैं वो	उसका	इंकार करने वाले	यही वो लोग हैं	जिन्हें

هَدَى	اللّٰهُ	فَبِهُدٰىهُمُ	اقْتَدِهْ ؕ	قُلْ	لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ	عَلَيْهِ
हिदायत दी	अल्लाह ने	पस उनकी हिदायत की	आप पैरवी कीजिए	कह दीजिए	नहीं मैं सवाल करता तुमसे	उस पर

10 ع 8 16

اَجْرًا ؕ	اِنْ	هُوَ	اِلَّا	ذِكْرٰى	لِلْعٰلَمِيْنَ (90) ع	وَمَا	قَدَرُوا
किसी अज्र का	नहीं	वो	मगर	एक नसीहत	तमाम जहान वालों के लिए	और नहीं	उन्होंने क़द्र की

اللّٰهَ	حَقَّ	قَدْرِهٖٓ	اِذْ	قَالُوْا	مَآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ	عَلٰى بَشَرٍ
अल्लाह की	जिस तरह हक़ है	उसकी क़द्र करने का	जब	उन्होंने कहा	नहीं	नाज़िल की	अल्लाह ने	किसी इंसान पर

مِّنْ شَيْءٍ ؕ	قُلْ	مَنْ	اَنْزَلَ	الْكِتٰبَ	الَّذِىْ	جَآءَ	بِهٖ
कोई चीज़	कह दीजिए	किसने	नाज़िल की	किताब	वो जो	लाए	उसे

مُوْسٰى	نُوْرًا	وَّهُدًى	لِّلنَّاسِ	تَجْعَلُوْنَهٗ	قَرَاطِيْسَ	تُبْدُوْنَهَا
मूसा	नूर	और हिदायत थी	लोगों के लिए	तुम बना देते हो उसे	वरक़-वरक़	तुम ज़ाहिर करते हो उसे

وَتُخْفُوْنَ	كَثِيْرًا ۚ	وَعُلِّمْتُمْ	مَّا	لَمْ	تَعْلَمُوْٓا	اَنْتُمْ	وَلَآ
और तुम छुपाते हो	बहुत सा	और सिखाए गए हो तुम	जो	नहीं	तुम जानते थे	तुम	और ना

اٰبَآؤُكُمْ ؕ	قُلِ	اللّٰهُ ۙ	ثُمَّ	ذَرْهُمْ	فِيْ خَوْضِهِمْ	يَلْعَبُوْنَ (91)
आबा ओ अजदाद तुम्हारे	कह दीजिए	अल्लाह ने (उतारा है)	फिर	छोड़ दीजिए उन्हें	अपनी बहस में	वो खेलते फिरें

وَهٰذَا	كِتٰبٌ	اَنْزَلْنٰهُ	مُبٰرَكٌ	مُّصَدِّقُ	الَّذِيْ	بَيْنَ يَدَيْهِ
और ये	किताब है	नाज़िल किया हमने उसे	बरकत वाली	तस्दीक़ करने वाली	उसकी जो	इससे पहले है

وَلِتُنْذِرَ	اُمَّ الْقُرٰى	وَمَنْ	حَوْلَهَا ؕ	وَالَّذِيْنَ	يُؤْمِنُوْنَ	بِالْاٰخِرَةِ
और ताकि आप डराएं	अहले मक्का को	और जो	उसके इर्द-गिर्द है	और वो जो	ईमान रखते हैं	आख़िरत पर

يُؤْمِنُوْنَ	بِهٖ	وَهُمْ	عَلٰى صَلَاتِهِمْ	يُحَافِظُوْنَ (92)	وَمَنْ	اَظْلَمُ
वो ईमान लाते हैं	उस पर	और वो	अपनी नमाज़ की	वो हिफ़ाज़त करते हैं	और कौन	बड़ा ज़ालिम है

مِمَّنِ	افْتَرٰى	عَلَى اللّٰهِ	كَذِبًا	اَوْ	قَالَ	اُوْحِيَ	اِلَيَّ	وَلَمْ
उससे जो	गढ़ ले	अल्लाह पर	झूठ	या	वो कहे	वही की गई	तरफ़ मेरे	हालांकि नहीं

يُوْحَ	اِلَيْهِ	شَيْءٌ	وَّمَنْ	قَالَ	سَاُنْزِلُ	مِثْلَ	مَآ
वही की गई	तरफ़ उसके	कोई चीज़	और जो	कहे	ज़रूर मैं नाज़िल करूंगा	मानिंद	उसके जो

اَنْزَلَ	اللّٰهُ ؕ	وَلَوْ	تَرٰٓى	اِذِ	الظّٰلِمُوْنَ	فِيْ غَمَرٰتِ	الْمَوْتِ
नाज़िल किया	अल्लाह ने	और काश	आप देखें	जब	ज़ालिम	सख़्तियों में होंगे	मौत की

وَالْمَلٰٓئِكَةُ	بَاسِطُوْٓا	اَيْدِيْهِمْ ج	اَخْرِجُوْٓا	اَنْفُسَكُمْ ؕ	اَلْيَوْمَ
और फ़रिश्ते	फैलाए हुए होंगे	अपने हाथों को	निकालो	जानें अपनी	आज

تُجْزَوْنَ	عَذَابَ	الْهُوْنِ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَقُوْلُوْنَ	عَلَى اللّٰهِ
तुम बदला दिए जाओगे	अज़ाब	रुसवाई का	बवजह उसके जो	थे तुम	तुम कहते	अल्लाह पर

غَيْرَ الْحَقِّ	وَكُنْتُمْ	عَنْ اٰيٰتِهٖ	تَسْتَكْبِرُوْنَ (93)	وَلَقَدْ	جِئْتُمُوْنَا
नाहक़	और थे तुम	उसकी आयात से	तुम तकब्बुर करते	और अलबत्ता तहक़ीक़	आ गए तुम हमारे पास

فُرَادٰى	كَمَا	خَلَقْنٰكُمْ	اَوَّلَ	مَرَّةٍ	وَّتَرَكْتُمْ	مَّا	خَوَّلْنٰكُمْ
अकेले-अकेले	जैसा कि	पैदा किया था हमने तुम्हें	पहली	बार	और छोड़ आए तुम	जो	दिया हमने तुम्हें

وَرَآءَ	ظُهُوْرِكُمْ ج	وَمَا	نَرٰى	مَعَكُمْ	شُفَعَآءَكُمُ	الَّذِيْنَ
पीछे	अपनी पुश्तों के	और नहीं	हम देखते	साथ तुम्हारे	तुम्हारे सिफ़ारशियों को	वो जो

زَعَمْتُمْ	اَنَّهُمْ	فِيْكُمْ	شُرَكٰٓؤُا ط	لَقَدْ	تَّقَطَّعَ	بَيْنَكُمْ	وَضَلَّ
गुमान किया था तुमने	कि बेशक वो	तुम में	शरीक हैं	अलबत्ता तहक़ीक़	कट गया (ताल्लुक़)	तुम्हारे दर्मियान	और गुम हो गया

11 ع 4 17

عَنْكُمْ	مَّا	كُنْتُمْ	تَزْعُمُوْنَ ﴿94﴾ ع	اِنَّ	اللّٰهَ	فَالِقُ	الْحَبِّ
तुमसे	वो जो	थे तुम	तुम गुमान किया करते	बेशक	अल्लाह	फाड़ने वाला है	दाने

وَالنَّوٰى ط	يُخْرِجُ	الْحَيَّ	مِنَ الْمَيِّتِ	وَمُخْرِجُ	الْمَيِّتِ	مِنَ الْحَيِّ ط
और गुठली को	वो निकालता है	ज़िंदा को	मुर्दा से	और निकालने वाला है	मुर्दा को	ज़िंदा से

ذٰلِكُمُ	اللّٰهُ	فَاَنّٰى	تُؤْفَكُوْنَ ﴿95﴾	فَالِقُ	الْاِصْبَاحِ ج	وَجَعَلَ	الَّيْلَ
ये है	अल्लाह	तो कहां से	तुम फेरे जाते हो	फाड़ने वाला है	सुबह का	और उसने बनाया	रात को

سَكَنًا	وَّالشَّمْسَ	وَالْقَمَرَ	حُسْبَانًا ط	ذٰلِكَ	تَقْدِيْرُ	الْعَزِيْزِ
बाइसे सुकून	और सूरज	और चांद को	हिसाब का ज़रिया	ये	अंदाज़ा है	बहुत ज़बरदस्त का

الْعَلِيْمِ ﴿96﴾	وَهُوَ	الَّذِيْ	جَعَلَ	لَكُمُ	النُّجُوْمَ	لِتَهْتَدُوْا	بِهَا
बहुत इल्म वाले का	और वो ही है	जिसने	बनाए	तुम्हारे लिए	सितारे	ताकि तुम राह पाओ	उनके ज़रीए

فِيْ ظُلُمٰتِ	الْبَرِّ	وَالْبَحْرِ ط	قَدْ	فَصَّلْنَا	الْاٰيٰتِ	لِقَوْمٍ
तारीकियों में	खुश्की की	और समुन्दर की	तहक़ीक़	खोल कर बयान कर दीं हमने	आयात	उन लोगों के लिए

يَّعْلَمُوْنَ ﴿97﴾	وَهُوَ	الَّذِيْٓ	اَنْشَاَكُمْ	مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ	فَمُسْتَقَرٌّ
जो इल्म रखते हैं	और वही है	जिसने	पैदा किया तुम्हें	एक जान से	फिर एक रहने की जगह

وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ	قَدْ	فَصَّلْنَا	الْاٰيٰتِ	لِقَوْمٍ	يَّفْقَهُوْنَ ﴿98﴾
और एक सुपुर्द किए जाने की जगह है	तहक़ीक़	खोल कर बयान कर दीं हमने	आयात	उन लोगों के लिए	जो समझते हैं

وَهُوَ	الَّذِیْۤ	اَنْزَلَ	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً ۚ	فَاَخْرَجْنَا	بِهٖ	نَبَاتَ
और वो ही है	जिसने	उतारा	आसमान से	पानी	फिर निकाली हमने	साथ उसके	पैदावार

كُلِّ	شَیْءٍ	فَاَخْرَجْنَا	مِنْهُ	خَضِرًا	نُّخْرِجُ	مِنْهُ	حَبًّا
हर	चीज़ की	फिर निकाला हमने	उससे	सब्ज़ा	हम निकालते हैं	उससे	दाने

مُّتَرَاكِبًا ۚ	وَمِنَ النَّخْلِ	مِنْ طَلْعِهَا	قِنْوَانٌ	دَانِيَةٌ	وَّجَنّٰتٍ
तय-ब-तय	और खजूरों से	उनके शगूफ़ों से	ख़ोशे	झुके हुए	और बाग़ात

مِّنْ اَعْنَابٍ	وَّالزَّيْتُوْنَ	وَالرُّمَّانَ	مُشْتَبِهًا	وَّغَيْرَ	مُتَشَابِهٍ ؕ
अंगूरों के	और ज़ैतून	और अनार	मिलते-जुलते	और नहीं भी	मिलते-जुलते

اُنْظُرُوْۤا	اِلٰى	ثَمَرِهٖۤ	اِذَاۤ	اَثْمَرَ	وَيَنْعِهٖ ؕ	اِنَّ	فِیْ ذٰلِكُمْ
देखो	तरफ़	उसके फल के	जब	वो फल लाए	और उसके पकने के	बेशक	उसमें

لَاٰيٰتٍ	لِّقَوْمٍ	يُّؤْمِنُوْنَ ﴿99﴾	وَجَعَلُوْا	لِلّٰهِ	شُرَكَآءَ	الْجِنَّ
अलबत्ता निशानियां हैं	उन लोगों के लिए	जो ईमान रखते हों	और उन्होंने बना लिया	अल्लाह के लिए	शरीक	जिन्नों को

وَخَلَقَهُمْ	وَخَرَقُوْا	لَهٗ	بَنِيْنَ	وَبَنٰتٍ	بِغَيْرِ	عِلْمٍ ؕ
हालांकि उसने पैदा किया उन्हें	और उन्होंने गढ़ लिए	उसके लिए	बेटे	और बेटियां	बग़ैर	इल्म के

ع 12 6 18

سُبْحٰنَهٗ	وَتَعٰلٰى	عَمَّا	يَصِفُوْنَ ﴿100﴾ ع	بَدِيْعُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ
पाक है वो	और बुलंदतर है	उससे जो	वो वस्फ़ बयान करते हैं	मूजिद है	आसमानों	और ज़मीन का

اَنّٰى	يَكُوْنُ	لَهٗ	وَلَدٌ	وَّلَمْ	تَكُنْ	لَّهٗ	صَاحِبَةٌ ؕ
क्यों कर	हो सकती है	उसकी	कोई औलाद	हालांकि नहीं	है	उसकी	कोई बीवी

وَخَلَقَ	كُلَّ	شَيْءٍ ج	وَهُوَ	بِكُلِّ	شَيْءٍ	عَلِيْمٌ (101)	ذٰلِكُمُ
और उसने पैदा किया	हर	चीज़ को	और वो	हर	चीज़ को	ख़ूब जानने वाला है	ये है

اللّٰهُ	رَبُّكُمْ ج	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ ج	خَالِقُ	كُلِّ	شَيْءٍ
अल्लाह	रब तुम्हारा	नहीं	कोई इलाह (बर हक़)	मगर	वो ही	पैदा करने वाला है	हर	चीज़ का

فَاعْبُدُوْهُ ج	وَهُوَ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	وَّكِيْلٌ (102)	لَا تُدْرِكُهُ	الْاَبْصَارُ ز
पस इबादत करो उसी की	और वो	ऊपर	हर	चीज़ के	कारसाज़ है	नहीं पा सकतीं उसे	निगाहें

وَهُوَ	يُدْرِكُ	الْاَبْصَارَ ج	وَهُوَ	اللَّطِيْفُ	الْخَبِيْرُ (103)	قَدْ	جَآءَكُمْ
और वो	वो पा लेता है	निगाहों को	और वो	बहुत बारीक बीन है	ख़ूब बाख़बर है	तहक़ीक़	आ गईं तुम्हारे पास

بَصَآئِرُ	مِنْ رَّبِّكُمْ ج	فَمَنْ	اَبْصَرَ	فَلِنَفْسِهٖ ج	وَمَنْ	عَمِيَ
खुली दलीलें	तुम्हारे रब की तरफ़ से	तो जिसने	देख लिया	तो उसके अपने लिए है	और जो	अंधा हुआ

فَعَلَيْهَا ط	وَمَآ	اَنَا	عَلَيْكُمْ	بِحَفِيْظٍ (104)	وَكَذٰلِكَ	نُصَرِّفُ
तो उसी पर है	और नहीं	मैं	तुम पर	कोई निगरां	और इसी तरह	हम फेर-फेर कर लाते हैं

الْاٰيٰتِ	وَلِيَقُوْلُوْا	دَرَسْتَ	وَلِنُبَيِّنَهٗ	لِقَوْمٍ	يَّعْلَمُوْنَ (105)
आयात को	और ताकि वो कहें	पढ़ लिया है तूने	और ताकि हम बयान करें उसे	उन लोगों के लिए	जो इल्म रखते हैं

اِتَّبِعْ	مَآ	اُوْحِيَ	اِلَيْكَ	مِنْ رَّبِّكَ ج	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا
पैरवी कीजिए	उसकी जो	वही किया गया	तरफ़ आपके	आपके रब की तरफ़ से	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर

هُوَ ج	وَاَعْرِضْ	عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ (106)	وَلَوْ	شَآءَ	اللّٰهُ	مَآ	اَشْرَكُوْا ط
वही	और ऐराज़ कीजिए	मुशरिकीन से	और अगर	चाहता	अल्लाह	ना	वो शिर्क करते

وَمَا	جَعَلْنٰكَ	عَلَيْهِمْ	حَفِيْظًا ج	وَمَآ	اَنْتَ	عَلَيْهِمْ	بِوَكِيْلٍ (107)
और नहीं	बनाया हमने आपको	उन पर	मुहाफ़िज़	और नहीं	आप	उन पर	कोई कारसाज़

وَلَا	تَسُبُّوا	الَّذِيْنَ	يَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	فَيَسُبُّوا	اللّٰهَ
और ना	तुम गाली दो	उनको जिन्हें	वो पुकारते हैं	सिवाए	अल्लाह के	तो वो गाली देंगे	अल्लाह को

عَدْوًۢا	بِغَيْرِ	عِلْمٍ ؕ	كَذٰلِكَ	زَيَّنَّا	لِكُلِّ	اُمَّةٍ	عَمَلَهُمْ ص
ज़्यादती करके	बग़ैर	इल्म के	इसी तरह	मुज़य्यन कर दिए हमने	वास्ते हर	उम्मत के	अमल उनके

ثُمَّ	اِلٰى رَبِّهِمْ	مَّرْجِعُهُمْ	فَيُنَبِّئُهُمْ	بِمَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ (108)
फिर	तरफ़ अपने रब के	लौटना है उनका	फिर वो बता देगा उन्हें	वो जो	थे वो	वो अमल करते

وَاَقْسَمُوْا	بِاللّٰهِ	جَهْدَ	اَيْمَانِهِمْ	لَئِنْ	جَآءَتْهُمْ	اٰيَةٌ
और उन्होंने क़समें खाईं	अल्लाह की	पक्की	क़समें अपनी	अलबत्ता अगर	आई उनके पास	कोई निशानी

لَّيُؤْمِنُنَّ	بِهَا ؕ	قُلْ	اِنَّمَا	الْاٰيٰتُ	عِنْدَ اللّٰهِ	وَمَا
अलबत्ता वो ज़रूर इमान लाऐंगे	उस पर	कह दीजिए	बेशक	निशानियां	पास हैं अल्लाह के	और क्या चीज़

يُشْعِرُكُمْ ۙ	اَنَّهَآ	اِذَا	جَآءَتْ	لَا يُؤْمِنُوْنَ (109)	وَنُقَلِّبُ
आगाह करे तुम्हें	कि बेशक वो	जब	वो आ जाऐंगी	नहीं वो ईमान लाऐंगे	और हम फेर देंगे

اَفْئِدَتَهُمْ	وَاَبْصَارَهُمْ	كَمَا	لَمْ	يُؤْمِنُوْا	بِهٖٓ	اَوَّلَ
उनके दिलों को	और उनकी निगाहों को	जैसा कि	नहीं	वो ईमान लाए	उस पर	पहली

مَرَّةٍ	وَّنَذَرُهُمْ	فِيْ طُغْيَانِهِمْ	يَعْمَهُوْنَ (110) ع
बार	और हम छोड़ देंगे उन्हें	उनकी सरकशी में	वो भटकते फिरेंगे

ع 13 10 19